बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक

सितंबर, 1989

रु 4.00

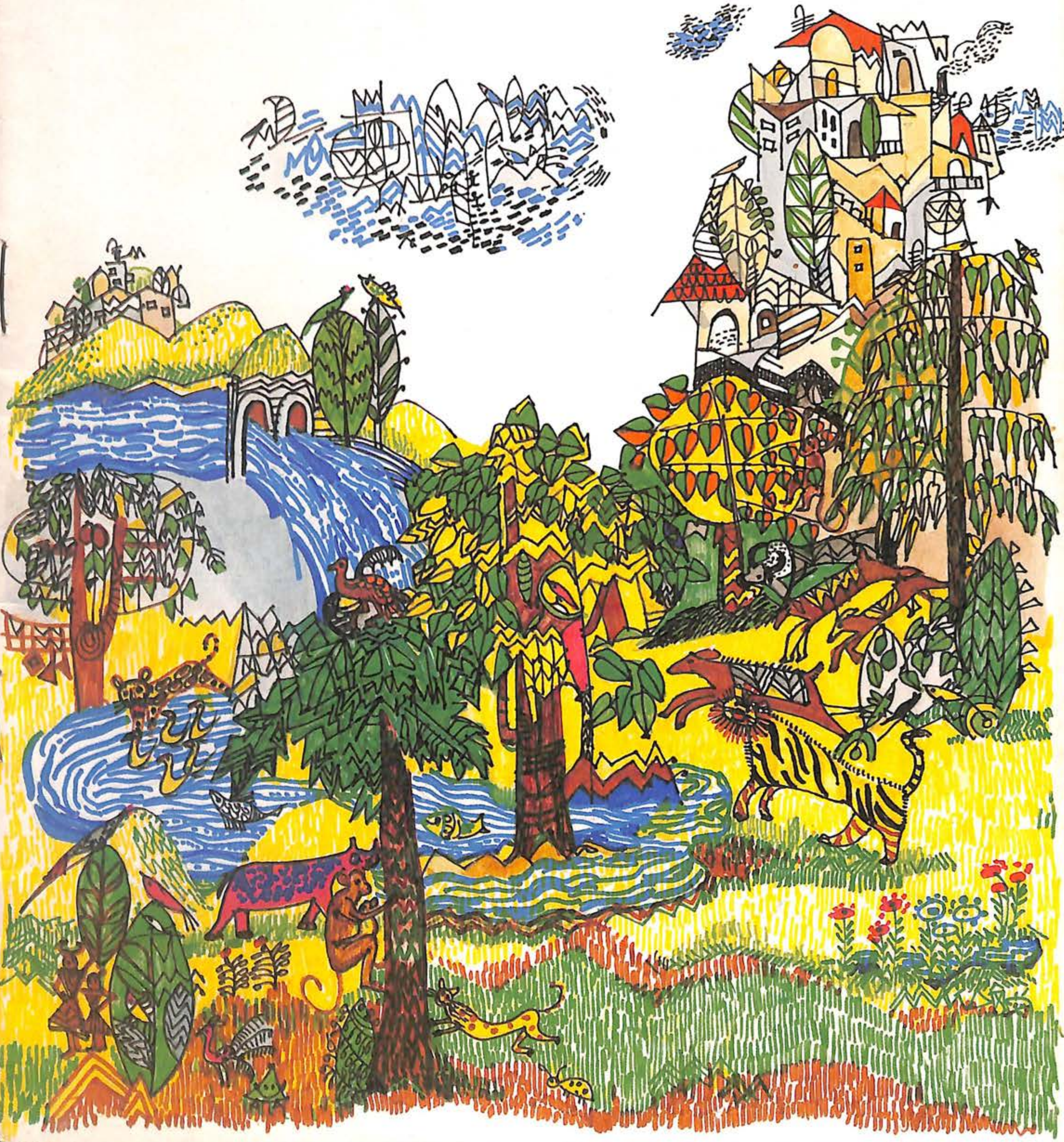

किशोर योगी, सातवीं, जिवाजीगढ़

उज्ज्वला सरस, पांचवीं, दुर्ग

राधा यादव, दूसरी, ऊंचिया, दतिया

बापूसिंह, सातवीं, लसूड़िया राठौर, मंदसौर

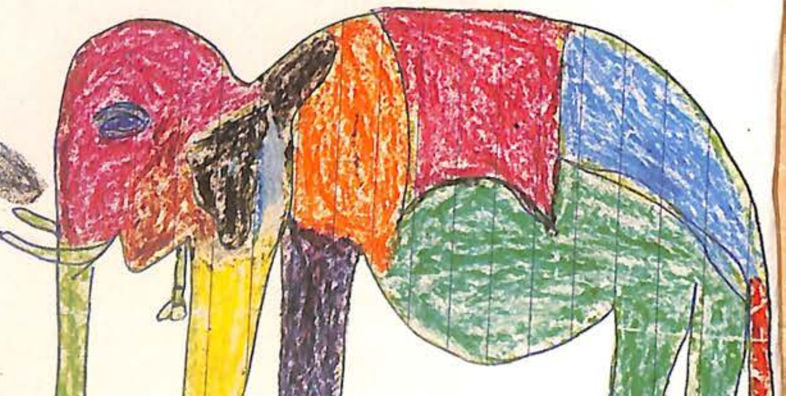

दर्शनसिंह, छठवीं, लसूड़िया राठौर, मंदसौर

पदमसिंह, छठवीं, मालिया

बीना जैन, आठवीं, मेघनगर, झाबुआ।

विशाल कुमार मेहरा, हबीबगंज, भोपाल

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष 5 अंक 3 सितंबर, 1989
संपादक
विनोद रायना
सह-संपादक
राजेश उत्साही
कला
जया विवेक
उत्पादन/वितरण
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह

चकमक का चंदा
एक प्रति : चार रुपएं
छमाही : बीस रुपए
वार्षिक : चालीस रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता :
एकलव्य,
ई-1/208, अरेरा कालोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.).

कागज़ : 'यूनिसेफ' के सौजन्य से
सहयोग : राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी संचार परिषद् (विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली)

इस अंक में...

मेरा पन्ना	2
नन्हे सवाल	6
कहानी : अपनी आवाज़ का डर	8
काग़ज़ से ज्यामिति	11
कविताएं	12
ज्योतिष और भविष्यवाणी	14
कहानी : फगुवा का सवाल	16
दुनिया पक्षियों की - 6	18
कौन मानव, कौन जानवर!	19
माथा पच्ची	28
खतरा : स्कूल; भाग तेरह	30
कविता : मैडम	38

आवरण : शोभा घारे

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

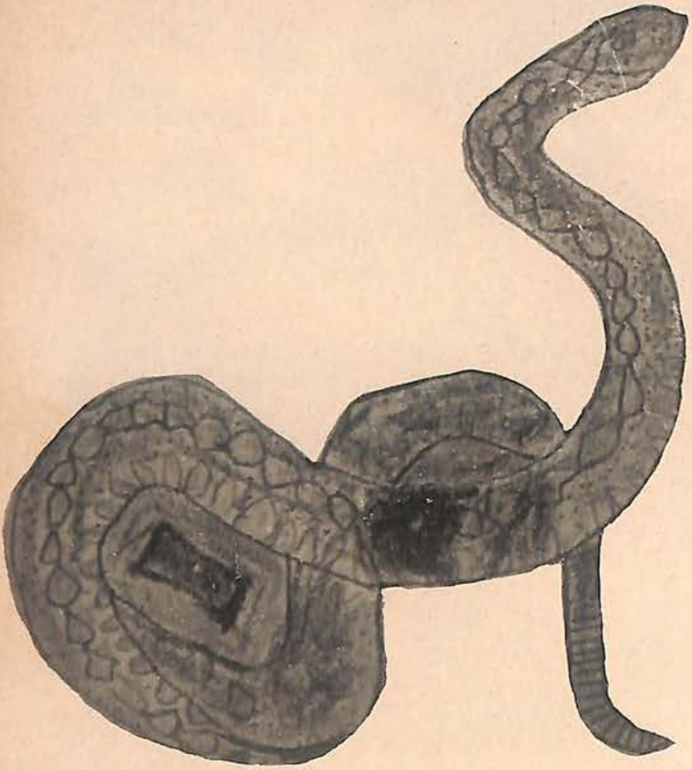

महेन्द्रसिंह राजपूत, सातवीं

सांप ने सोचा

एक दिन एक सांप इधर-उधर घूमने निकला। सांप के सामने से एक लड़की आ रही थी। सांप ने सोचा मेरे पास ज़हर है लेकिन इस लड़की को काटूं या नहीं! फिर सांप ने सोचा यह लड़की मेरी तरफ आ रही है तब तो आख़िर इसको काटना ही पड़ेगा।

लेकिन एक बात है जब इसको मैं काटूंगा तो यह चिल्ला पड़ेगी। चिल्लाने की आवाज़ सुनकर लोग दौड़कर आ जाएंगे और मेरी जमकर सुताई कर देंगे। इससे अच्छा मुझे ही इस रास्ते को छोड़कर खिसक लेना चाहिए। और सांप दूसरा रास्ता पकड़कर चलता बना।

☐ अशोक हुसैन, तीसरी, मानकुंड, देवास
(बालकलम)

जिसको समझा सेवफल वो था आलू

सुबह जब मैं उठा तो मैंने खूंटी पर टंगी-थैली में हाथ डाला। उसमें कुछ था। मैंने सोचा इस थैली में एक सेवफल रखा है। मैंने हाथ-मुंह धोया और थैली में से निकालकर जेब में रख लिया और स्कूल चला गया।

स्कूल में आने के बाद मैंने कन्हैया से कहा, ''कि मैं सेवफल लाया हूं।''

कन्हैया ने कहा, ''कां हैं सेवफल।''

मैंने कहा, ''मेरे पेण्ट की जेब में।''

मैंने कन्हैया को चाकू लाने भेज दिया। कन्हैया चाकू लाया। तो फिर मैंने सोचा कि कन्हैया को एक ही चीर दूंगा। मैंने कन्हैया से कहा, ''मैं तुझे एक ही चीर दूंगा।''

आशीष राठौर, देवास

यह कहकर मैंने जेब में हाथ डाला, तो वह थोड़ा लंबा-सा लगा। मैंने सोचा ये लंबा-लंबा क्या है? फिर मैंने जेब से बाहर निकाला तो वह आलू निकला। मैं मुंह लटकाकर घर चला गया।

☐ कृष्ण पटेल, छठवीं, चंदाना, देवास
(बालकलम)

भालू से मुठभेड़

सिद्धार्थ अग्रवाल, भोपाल

जब मैं पांचवीं कक्षा में पढ़ता था तब की बात है। हमारी पाठशाला जंगली इलाक़े पर बसी हुई थी। शाला जंगल के इतनी नज़दीक थी कि जंगली जानवरों की आवाज़ हमारी शाला में गूंजती रहती थी। विद्यार्थियों में तो कई निडर और कई बेहद डरपोक हुआ करते थे। मुझे भी पहले जानवरों की आवाज़ से बेहद डर लगता था लेकिन मैं भी कुछ निडर साथियों के साथ रहते-रहते निडर बन गया था। कई बार तो ख़तरनाक जानवर हमारे आगे से निकल जाते थे पर किसी को नुक़सान नहीं पहुंचाते थे।

एक बार हमारी पाठशाला में दोपहर को पूरी क्लास की छुट्टी हो गई। डरपोक विद्यार्थी तो 'गुरुजी' के साथ घर चले गए, लेकिन मेरे निडर साथियों ने 'मोक्काइया' फल खाने का निर्णय लिया। तभी हमारे साथियों के बीच से कमलेश चिल्ला पड़ा, "अरे। 'मोक्कइया' वृक्ष के आसपास भालू रहते हैं जिससे हमारा वहां जाना जान को ख़तरा बन सकता है।"

तभी हमारे ग्रुप के मुखिया मनोज ने हमें समझाते हुए कहा, "बच्चों के समूह को देखकर भालू क्या बाघ भी छुमन्तर हो जाता है। लेकिन हम तो बड़े बच्चे हैं।" उसकी बात से हमारे साथियों की हंसी रुक नहीं सकी और मैं भी उनके साथ ठहाके लगाने लगा।

तब हमने अपने-अपने बस्तों को एक सुरक्षित स्थान पर रख दिया। और 'मोक्कइया' फल खाने के लिए घने जंगल की तरफ जाने लगे। हमारे साथियों में अब डर की भावना नाम मात्र भी नहीं थी। मनोज लाठी पकड़े आगे-आगे शेर की भांति चल रहा था। मैं भी साथियों के पीछे-पीछे चल रहा था। आगे 'मोक्कइया' वृक्ष दिखने से हमारे सभी साथी प्रसन्न हो उठे। लेकिन

मुझमें तो हंसने का थोड़ा भी लक्षण नहीं था क्योंकि मुझे भालू का डर सता रहा था। मनोज सावधानी से एक घनी झाड़ी को देख रहा था। तभी मैंने अचानक पीछे मुड़कर देखा कि एक विशालकाय भालू अपने पंजों से मुझे स्पर्श करने के लिए तुला हुआ था। मैं तो चिल्ला कर धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा। जब होश आया तो देखा, मनोज ने उसे बहुत दूर तक खदेड़ दिया था। मुझमें डर की भावना बढ़ती जा रही थी लेकिन साथियों के समझाने से मुझे कुछ शांति मिली।

अंत में सभी मित्रों ने खूब 'मोक्कइया' फल खाया और संध्या से पहले घर पहुंच गए।

□ विश्वास ठाकुर, ग्यारहवीं, चागमा, बस्तर

पतंग की करामात

एक बार मैं पतंग उड़ा रहा था। अचानक मेरी पतंग बहुत-बहुत दूर चढ़ गई। मेरी पतंग चांद में अटक गई थी, अब क्या! तब आसमान में दो आदमी चढ़े थे। और वे नीचे नहीं आ पा रहे थे। भूल से वे दोनों मेरी पतंग पर बैठ गए। मैंने एक झटका मारा, तो वे दोनों मेरी पतंग के साथ नीचे आ गए।

चित्र एवं कहानी : निकोलस बर्न, पांचवीं, हरदा

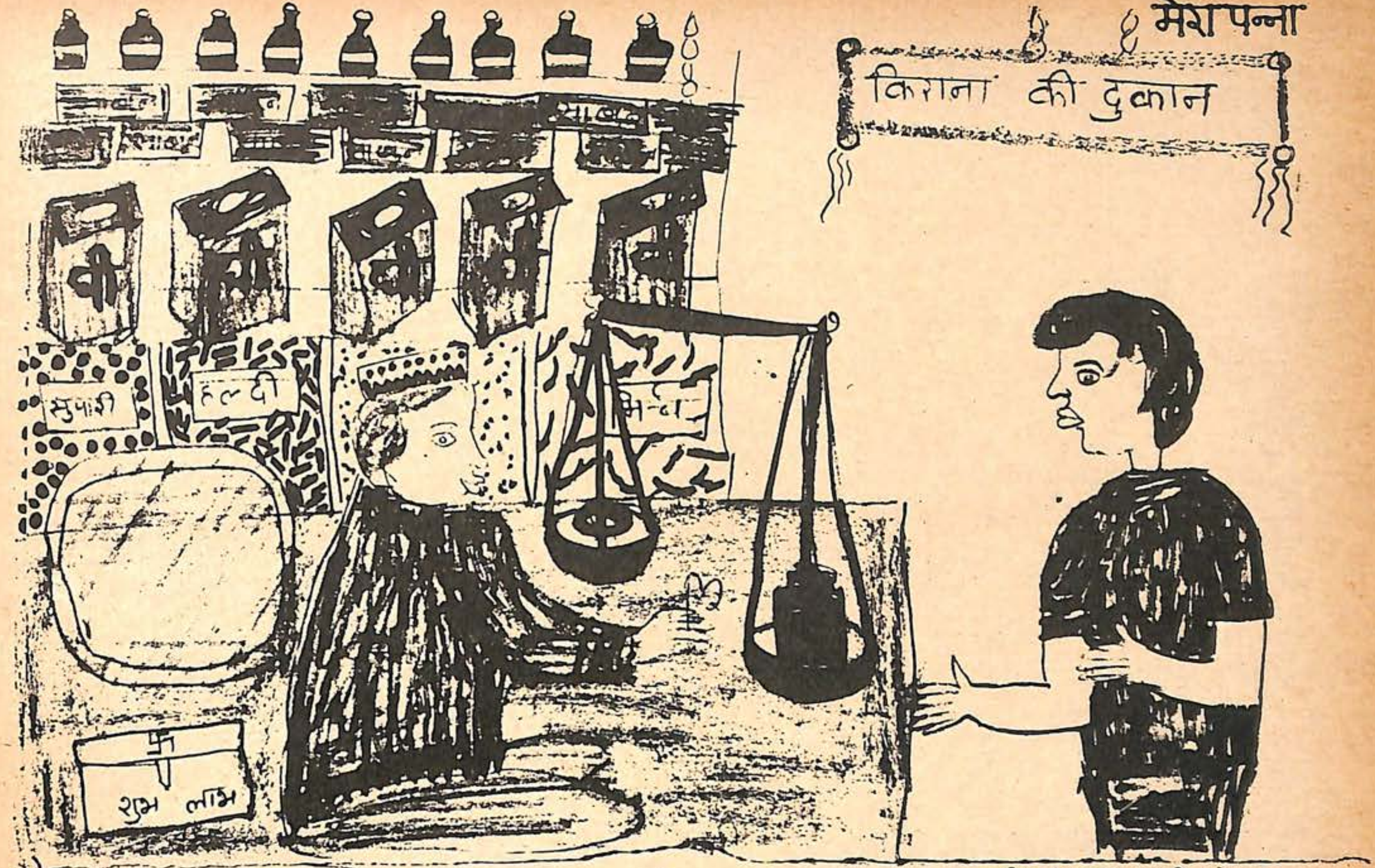

दीपा अग्रवाल, दसवीं, भोपाल

विस्फोट

एक बार मैं अपनी मौसी के घर अपने छोटे भाई को लेकर गई। मौसी के घर के आसपास बड़ी संख्या में बर्तनों की दुकान थीं। दोपहर का समय था, इसलिए दुकान के मालिक खाना खा रहे थे। कुछ घर से खाकर आ चुके थे और कुछ खाने जा रहे थे।

हम अपनी मौसी के बच्चों के साथ बाहर खेल रहे थे। तभी एक धमाका हुआ। धमाका हमसे कोई सौ मीटर की दूरी पर एक दुकान में हुआ था। जहां पर दो छोटे बच्चे जिनकी उम्र दस-बारह साल के लगभग थी, अपने पिता की ग़ैर हाजरी में दूकान पर बैठे थे।

उस धमाके की आवाज़ से वहां आसपास के लोग व दुकानदारों की भीड़ इकट्ठी हो गई थी। उन लोगों ने पुलिस को ख़बर की और दोनों बच्चों को निकालने लगे। उस दुकान की ऐसी कोई वस्तु नहीं थी जो सही-सलामत हो।

तभी पुलिस आ गई। बच्चों की हालत बहुत ख़राब हो गई थी। शरीर पर जगह-जगह चोट के निशान थे। पुलिस ने एंबूलेंस में दोनों बच्चों को रखा और दो जवानों के साथ दवाख़ाने भेज दिया। और फिर वहां घटी घटना के बारे में लोगों से पूछताछ करने लगी।

हम अपने घर से ही सारा नज़ारा देख रहे थे। तभी एक औरत रोती-रोती आई, शायद वह उन बच्चों की मां थी जो ख़बर पाते ही दौड़ी चली आई थी। जब उसने पास से अपनी दुकान को देखा तो वह सड़क पर गिर पड़ी । जब उसे होश आया तो वह अपने बच्चों को देखना चाहती थी। उसे जल्द ही अस्पताल पहुंचा दिया गया। पुलिस कड़ी कोशिश के बाद भी कोई सूत्र नहीं ढूंढ पाई कि विस्फोट का कारण क्या था?

☐ भावना टोके, बालगढ़, देवास

नन्हे ?

जुकाम लगने पर खांसी और छींकें क्यों आती हैं ?

जुकाम लगने पर हमारी नाक और गले में बहुत से छोटे-छोटे कीटाणु जमा हो जाते हैं जिससे हमें बेचैनी होती रहती है। नाक बहती रहती है और गले में बलगम जमा हो जाता है। खाँसी और छीकें इसलिए आती हैं कि हमारा गला और नाक साफ हो जाए।

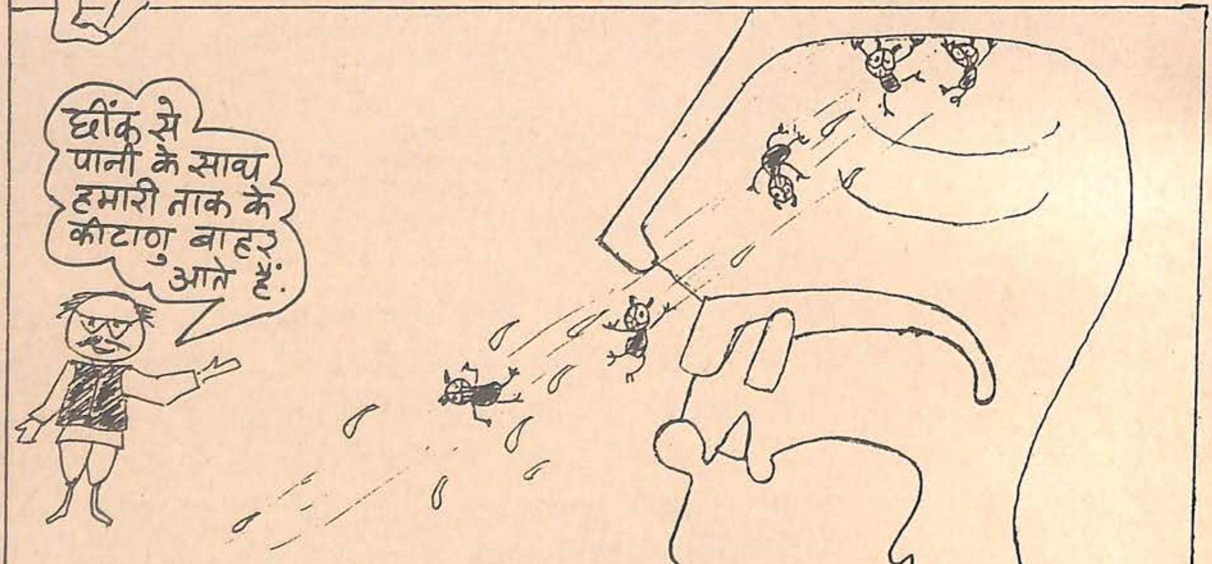

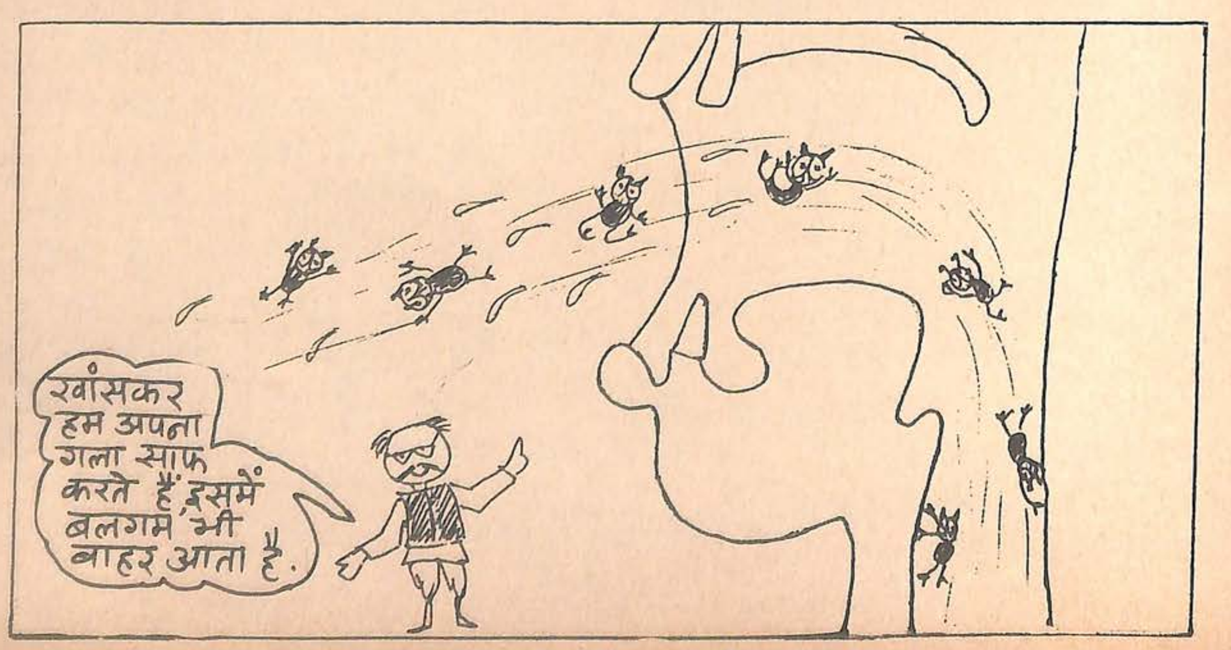

कभी - कभी अच्छे भले होते हुए भी हमें खांसी या छींक आ जाती है।

कई बार सूरज की ओर देखने से, या मसाले सूंघने से भी छींक आ जाती है। अगर हम जल्दी - जल्दी खाना खा रहे हों और खाना गले में अटक जाए तो भी खांसी आ जाती है।

हमें खांसी को रोकने की कोशिश करनी चाहिए।

ज़्यादा खांसी आने से हमें थकान होने लगती है क्योंकि खांसने में बहुत ऊर्जा नष्ट होती है। जब हमें लगे कि खांसी आने वाली है तो हमें धीरे-धीरे गहरी सांस लेनी चाहिए, या थोड़ा - सा पानी पी लेना चाहिए।

मुंह ढक कर खांसो

यह बहुत जरूरी बात है। खांसते और छींकते समय हमारे मुंह और नाक से निकले कीटाणु अगर सामने वाले की सांस के साथ अंदर चले गए तो सोचो क्या होगा? इसी तरह खांसी का बलगम भी हमें जहां - तहां नहीं थूकना चाहिए।

माता-पिता और शिक्षक के लिए

हमारी नाक, गलकोष (फेरिंक्स), भोजन नली आदि वे अंग हैं, जिनसे होकर सांस गुजरती है। एक तरह से ये श्वसन नली के भाग भी हैं। इस नली की भीतरी सतह की झिल्ली (म्यूकस मेम्ब्रेन) जुकाम के समय सूज जाती है और बहुत-सा म्यूकस बनाने लगती है। श्वसन तंत्र में बलगम व नासिका द्रव जमा हो जाता है, जिससे हमें बेचैनी होती है और खांसी व छींकें आती हैं।

□ चित्र, शब्द एवं सज्जा : स्मिता अग्रवाल, जयपुर

अपनी ही आवाज़ का डर

कन्हैया के पिता नहीं थे। मां रोज़ सवेरे दो मोटी रोटियां, प्याज और थोड़ा सा नमक, कभी-कभी मिल गया तो गुड़ और अचार दोपहर में खाने के लिए एक कपड़े के टुकड़े में बांध कर उसे थमा देती। कन्हैया को सारे गांव की गाएं चराने दूर जंगल में जाना पड़ता था। रोज़ सुबह सूरज उगने से पहले दस साल की उमर का कन्हैया गांव के जानवरों को घेर कर गांव की सीमा पार कर जंगल में धंस जाता और सूरज डूबने के साथ ही किसी भैंस की पीठ पर सवार हुआ घर को लौटता हुआ दिखाई पड़ता।

जिस उमर में कन्हैया को स्कूल जाना चाहिए था उस उमर से ही कन्हैया घर चलाने को "पहाटिया" बन गया था। उसके बचपन के साथी जब बगल में बस्ते दबाए स्कूल जाते, वह पहाटिया बना किसी बछिया या बछड़े की रस्सी बगल में दबाए जानवरों को हांकता हुआ जंगल में जाता। वहां जाकर वह पशुओं को चरने के लिए छोड़ देता, और खुद पेड़ों पर चढ़कर चिड़ियों के घोंसलों को खोजता, रंग-बिरंगी तितलियों के पीछें भागता, या फिर घाटी की झील में घंटों तैरता रहता। उसे जंगल के पेड़ों पर रहने वाले हर एक पक्षी के अंडों, बच्चों की जानकारी थी। तरह-तरह के वन फूलों की ख़ुशबुओं से उसका घनिष्ठ परिचय था।

एक दिन झील में तैरते-तैरते उसने सोचा कि जैसे वह जंगल में गाएं चराने आता है वैसे ही दूसरे लड़के भी आते होंगे। अकेले-अकेले रहने से ऊबा हुआ कन्हैया किसी साथी की तलाश में था। अपने इस विचार से वह पुलकित हुआ। अपने मन में खुश होता हुआ वह झील के बाहर आया, उसकी भूख भी रस्सी तुड़ाने लगी थी।

पेट में कूदते हुए चूहों की परवाह न करते हुए वह किसी साथी की तलाश करने के लिए जंगल के सबसे ऊंचे वाले महुए के पेड़ पर चढ़ गया। पेड़ की सबसे ऊंची डाल पर चढ़ा वह आंखें फाड़-फाड़ कर चारों तरफ की टोह लेने लगा। मगर दूर-दूर तक पेड़ों के झुरमुट और दीवार की तरह सपाट चढ़ाई वाले पहाड़ के अलावा कुछ भी नहीं दिखा। वहीं से वह ज़ोर से चिल्लाया, "कोई है? यहां आओ, मेरे साथ खेलो।"

जब उसने पेड़ से उतरना शुरू किया तो उसे सुनाई पड़ा, "कोई है? यहां आओ, मेरे साथ खेलो।"

"कन्हैया जल्दी-जल्दी पेड़ से उतरा मगर बेकार, बहुत इंतज़ार के बाद भी कोई उसके साथ खेलने नहीं आया। अनमने मन से कन्हैया ने खाना खाया। इंतज़ार करते-करते सूरज की चटक धूप तांबिया रंग की होने लगी। उसने अपने पशुओं को इकट्ठा किया और गांव वापस लौट आया, लेकिन आज पहली बार उसके मन में यह बात बैठी कि जंगल में उसकी तरह दूसरे लड़के भी जानवर चराने आते ज़रूर हैं।

दूसरे दिन जंगल में पहुंचते ही वह बंदरों की तरह उछलता कूदता उस पेड़ पर चढ़ा और आवाज़ लगाई, "कौन है!"

उसे लगा चारों तरफ से यही प्रश्न उससे पूछा जा रहा है। आज जंगल में घुसते समय उसने महसूस किया था कि जंगल के भीतर से गाय, बछड़ों और आदमियों के चलने की धीमी-धीमी आवाज़ें आ रही हैं। गौर से सुनने पर जानवरों के गले में पड़ी हुई काठ और पीतल-तांबे की घंटियों की आवाज़ें भी उसने

पहचानी थीं। उत्साहित होकर उसने टेर लगाई, "यहांऽऽ आओऽऽ मेरे दोस्त बनो—ओऽ ओऽ ओ—मेरे साथ खेलोऽऽ ओऽऽ।" थोड़ी देर बाद यही शब्द उसे अपने लिए सुनाई पड़े। लेकिन कोई आता हुआ नहीं दिखाई पड़ा। खीजकर कन्हैया पेड़ से उतर आया।

तितलियां उड़ती रहीं, पेड़ों के घोंसलों से चिड़ियों के नन्हे-नन्हे बच्चे कन्हैया को टुकुर-टुकुर ताकते और चीं-चीं कर बुलाते रहे मगर कन्हैया का मन आज तितलियों, फूलों और चिड़ियों के बच्चों में नहीं रमा। वह इंतजार करते-करते खीजने लगा। उसे लगा जैसे जंगल में छिपे दूसरे लोग उसे छकाने के लिए सामने नहीं आ रहे हैं। जानबूझ कर उससे छिप रहे हैं। वह झल्ला कर गुस्से में चीखा, "तुम बदमाश हो। मेरे साथ यहां आकर क्यों नहीं खेलते?"

उसकी आवाज़ से भी ज़्यादा ज़ोर की आवाज़ में यही बात उस तक पहुंची। गुस्से में कांपता हुआ वह हलक फाड़ कर चिल्लाया, "यहां आओ तो मज़ा चखाऊंगा—तुम्हारा भुर्ता बना दूंगा। अभी देखता हूं तुम्हें।"

पशुओं को वहीं छोड़कर वह आवाज़ की दिशा में लगभग दौड़ता हुआ चीखता जा रहा था, "जाओगे कहां बच कर बच्चू अभी मज़ा चखाता हूं। बदमाश कहीं के—डरपोक, सामने आओ ना।"

उसे लगा कई दिशाओं से उसकी ओर भागती हुई पदचापें गूंजने लगी हैं। उसकी कही हुई गुस्से भरी आवाज़ों ने उसे ही चारों तरफ से घेर लिया है। अब तो कन्हैया के होश उड़ गए वह एकदम से डर कर कांपने लगा। उसके भागते क़दम ज़मीन से चिपक गए। हड़बड़ी में अपने पशुओं को इकट्ठा करके वह चौक्कने पन से उन्हें हांकता हुआ समय से पहले ही गांव की तरफ लौटने लगा। भूखे जानवरों ने जंगल से बाहर आते ही रास्ते में पड़ने वाले खेतों में खड़ी फसल को चरना शुरू कर दिया। खेतों के मालिकों ने बड़ी मुश्किल से उन्हें खदेड़ा और कन्हैया को ख़ूब खरी-खोटी बातें सुनाई। ख़ूब ख़बर ली उसकी, उसको तरह-तरह से डराया धमकाया।

डरा हुआ आतंकित कन्हैया रूआसा सा, भूखा प्यासा घर के एक कोने में दुबक कर सो गया। हड़बड़ी में वह अपने खाने की पोटली जंगल में ही छोड़ आया था, मगर डर और आतंक के मारे वह वापस जंगल में घुसने की हिम्मत नहीं जुटा पाया था। खेतों के काम से निपट कर जब उसकी मां घर आई तो कोने में सोते हुए कन्हैया पर उसकी नज़र पड़ी। थका जान कर उसने उसे जगाया नहीं। दिया-बाती होने के बाद भी जब कन्हैया नहीं जगा तो उसे आश्चर्य हुआ, वह उसके लिए चिंतित हो उठी, और उसने जैसे ही पुचकारते हुए उसके बदन को छुआ तो कन्हैया चिहुंक कर चीखने लगा, "नहीं-नहीं मुझे मत मारो, मैं कभी तुम्हें गाली नहीं दूंगा।" वह बड़बड़ा रहा था और उसका बदन गर्म तवे की तरह तप रहा था।

मां ने उसके सिर पर पानी की पट्टियां रखी। उसके तलवों को कांसे के कटोरे से रगड़ा। थोड़ा सा दूध मांगकर उसके मुंह में चम्मच से डाला, ममता से दुलराती रही। दो-तीन घंटे बाद कन्हैया ने अपनी

वीर-बहूटी सी लाल-लाल आंखें खोलकर चारों तरफ देखा फिर मां के आंचल में मुंह डाल कर फफक-फफक कर रोने लगा। मां होले से उसका सिर थपक कर पीठ सहलाने लगी।

मां के दुलार से उसका साहस लौटने लगा। उसने सुबकते हुए मां से विनती की कि कल से वह उसे जंगल में नहीं भेजे। वहां बहुत से बदमाश लड़के छिपे हैं, वे सब मिलकर उसे मार डालेंगे। मां ने उसे धीरज बंधाया और बाकी बचा हुआ दूध पिला दिया। धीरे-धीरे उसने कन्हैया से उसके साथ घटी पूरी कहानी जान ली। वास्तविकता जान लेने के बाद मां का मन हुआ कि कन्हैया के भोलेपन पर जी खोल कर हंसे मगर वह चाहती थी कि कन्हैया को उसकी भूल का खुद अहसास और उसके मन से ये झूठे डर हमेशा के लिए निकल जाएं। वह यह भी चाहती थी कि कन्हैया एक निर्भीक बालक बने, इसलिए कुछ देर सोचने के बाद उसने कन्हैया को ढाढस बंधाते हुए कहा कि वह डरे नहीं, कल से वह खुद उसके साथ जंगल में जाया करेगी। वह देखेगी कि वह बदमाश लड़के कौन हैं। ज़रूरी हुआ तो वह उन्हें मारेगी भी।

दूसरे दिन सुबह दोनों, मां-बेटा जंगल में गए। मां के बार-बार कहने पर भी डरे हुए कन्हैया ने उन्हें नहीं ललकारा तो मां ने लड़कों को ललकारते हुए, "कहां-कहां हो बच्चो, यहां आओ—मेरे कन्हैया के साथ खेलो। उसके दोस्त बनो।" कन्हैया का मुंह आश्चर्य से खुला रह गया। घाटी में उसकी मां के कहे हुए शब्द गूंजने लगे थे। वह कुछ समझ नहीं पाया ऐसा कैसे हो रहा है। वह फुसफुसाया, "मां लगता है वे लोग भी अपनी मां को लेकर आए हैं। भोले कन्हैया की बात सुनकर मां खिल-खिलाकर हंस पड़ी। उसकी हंसी की खिल-खिलाहट से घाटी गूंजने लगी। कन्हैया भी ठठा कर हंस पड़ा और आश्चर्य की उसकी हंसी का स्वर भी मां के स्वर के साथ-साथ घाटी में गूंजने लगा। कन्हैया का आतंक तो ख़त्म हो गया मगर बात अभी भी पूरी तरह से उसकी समझ में नहीं आ पाई थी।

मां ने उसके आश्चर्य को तोड़ते हुए जरा ज़ोर से कहा, "कन्हैया तुम एक निडर लड़के हो।" घाटी गूंजने लगी "कन्हैया तुम एक निडर लड़के हो।" उसने फिर कहा, "तुम एक अच्छे लड़के हो।" घाटी में आवाज़ गूंजी, "तुम एक अच्छे लड़के हो।" कन्हैया का हौसला लौट आया था वह भी चिल्लाया, "मां तुम बहुत अच्छी हो।" घाटी में उसका स्वर गूंज रहा था, "मां तुम बहुत अच्छी हो।"

अब मां ने उसे समझाया कि घाटी में आवाज़ गूंजती है। कन्हैया अपनी ही आवाज़ से डर गया था, यह बात उसकी समझ में आ गई थी।

दूसरे दिन जब कन्हैया जंगल में अपने पशुओं के साथ प्रविष्ट हो रहा था, उसने पुलकित होते हुए आवाज़ लगाई, 'दोस्तोंऽऽ मैं तुम्हें प्रणाम करता हूंऽऽऽऊं..ऊं।' घाटी उसके प्रणाम को चारों तरफ से उसे लौटा रही थी। उसे लगा कि जंगल के फूलों की खुशबू, चिड़ियों के बच्चों का चहकता संगीत और रंगीन तितलियों के चमकीले पंख उसे खेलने का निमंत्रण दे रहे हैं।

☐ **शंकर सक्सेना**

सभी चित्र : श्रद्धा सिद्धा

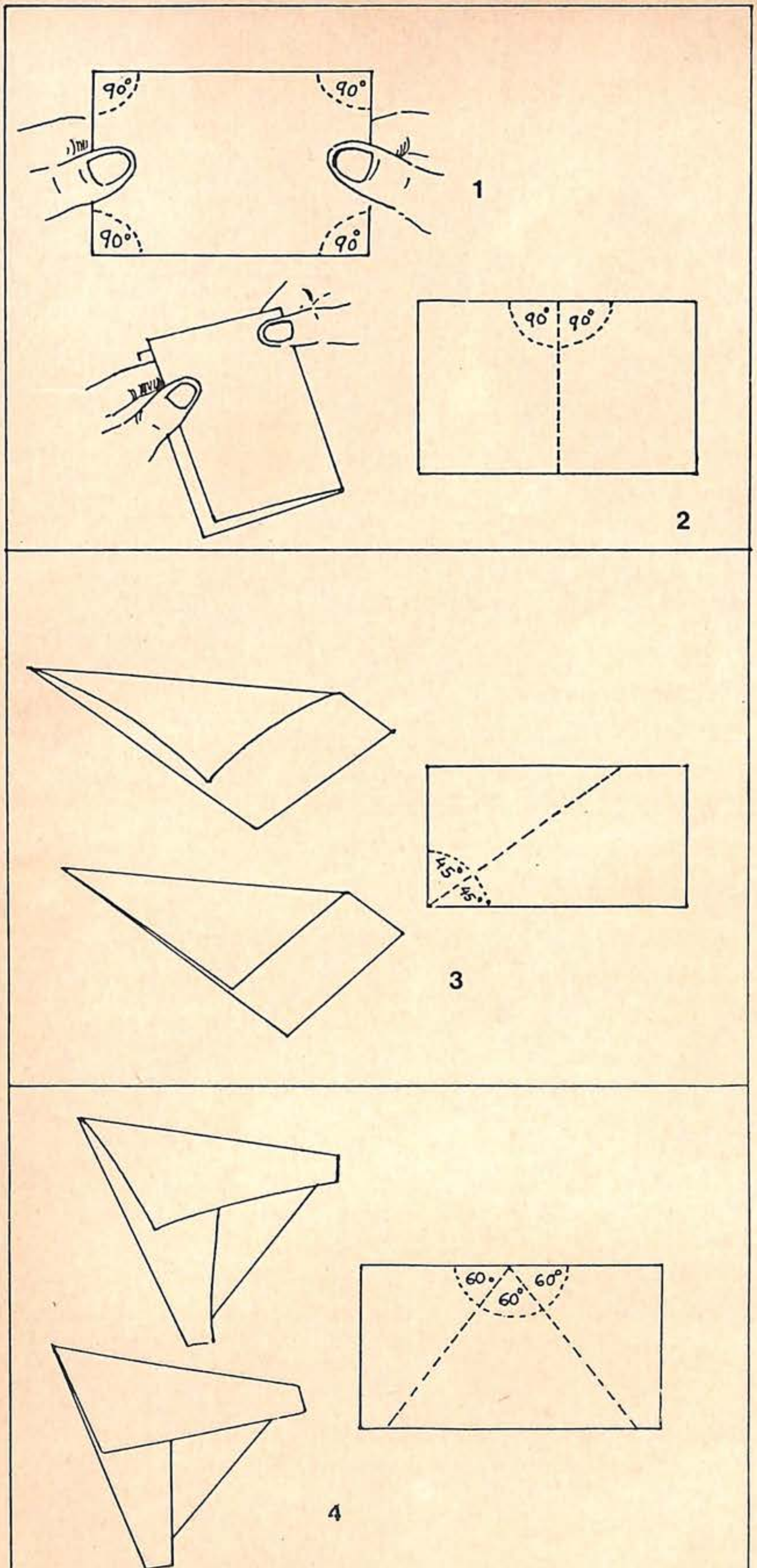

कागज़ से ज्यामिति

अगर हम एक सादे पन्ने को देखें तो वह हमें सपाट दिखता है, पर उसमें भी कई रेखाएं छिपी हैं।

शुरूआत सरल कोणों से करें। 90° का कोण तो तुम आसानी से ढूंढ सकते हो, क्योंकि कापी/किताबों के सभी कोने 90° के होते हैं (चित्र-1)।

पन्ने के किनारे की सीधी धार 180° की होती है। इसे प्रत्यक्ष देखने के लिए पन्ने को दो बराबर भागों में मोड़ो। मोड़ के दोनों ओर 90° के कोण दिखेंगे (चित्र-2)।

अब 45° का कोण तो तुम आसानी से ढूंढ सकते हो। पन्ने के किसी एक कोने को दो बराबर भागों में मोड़ दो (चित्र-3)।

सोचो 60° का कोण कैसे मोड़ोगे? यह भी काफी सरल है। कागज़ की किनार यानि 180° के कोण को तीन बराबर खंडों में बांट दो। इसके लिए किनार के बीचों-बीच एक बिंदु चुनो। इस बिंदु के दोनों ओर के किनारों को लगभग 60° के कोणों में मोड़ो। मोड़ने से पहले यह ध्यान रखो कि दोनों ओर की किनार पन्ने के मोड़ों पर एकदम जमकर बैठे (चित्र-4)। अब देखो सरल कोण तीन बराबर भागों में बंट गया। प्रत्येक भाग 60° का कोण है।

☐ अरविंद गुप्ता

सांझ

किरणों की पगड़ी को बांधे
चले सांझ को सूरज भइया
दूर कहीं पश्चिम में स्थित
अपने घर को बांध गठरिया

मैं बोला—ये खोल गठरिया
ज़रा हमें भी दिखलाओ
अच्छे भइया, प्यारे भइया
हमसे न इसे छिपाओ

ना, ना करते सूरज भइया
चढ़ गए एक मकान की छत पर
बिगड़ गया संतुलन बेचारे
पिछवाड़े गिर पड़े फिसलकर

खुली पोटली रंग सिंदूरी
बिखर गया सारा का सारा
सिंदूरी आकाश हो गया
वाह, भई वाह! क्या खूब नज़ारा!

□ अशोक अंजुम

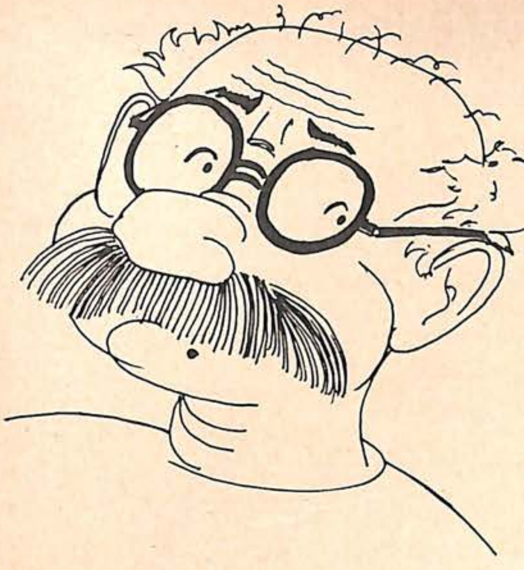

दादा जी की मूंछ

अभी अभी थी घोर समस्या
मन में थी हलचल।
माथा पकड़े सोच रहे थे
कैसे होगी हल?
दादा जी ने पर सुनते ही
कर दी झटपट हल।
बस छन भर ही को तो उनके
माथे पर थे बल।
थोड़ी सी मूंछें फड़की थीं
सोचा था दो पल।
आखिर झट से बोल दिया था
देखो यह है हल।
कैसे आती सूझ बूझ यह
कैसे आता हल!
क्या मूंछों में दादा जी की
छिप कर रहता हल?

□ दिविक रमेश

पैसे

ईर्ष्या, दंभ बढ़ाते पैसे
आपस में लड़वाते पैसे
खनक-खनक कर, चमक-चमक कर
हमको खूब लुभाते पैसे
इनके पीछे नहीं दौड़ना
सत्य और प्रेम मिटाते पैसे
अब मेरे हैं, कल उसके, ना—
एक जगह रुक पाते पैसे
दुनिया इनकी दीवानी है
सबको नाच नचाते पैसे

□ अशोक अंजुम

सभी चित्र : विवेक

ज्योतिष और भविष्यवाणी–सच्चाई क्या है?

भविष्यवाणी चार्ट

	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड	ढ
1				○								
2							○			○		
3										○		○
4	○											
5							○					
6										○		
7							○					○
8			○						○			
9				○								
10									○			
11	○										○	
12							○					
13											○	
14								○			○	
15		○										
16					○							
17					○							
18	○							○				
19									○			
20			○					○				○
21										○		
22			○									
23	○											
24	○				○					○		
25						○						
26												○
27				○								
28										○		
29						○						
30				○								
31						○		○				
32											○	
33				○								
34		○			○							
35									○			
36		○										
37		○			○							
38				○								
39						○						
40									○			
41		○										
42							○	○				
43					○							
44			○									
45	○											
46											○	
47			○									
48								○				○
49						○						
50			○									
51		○										
52							○					
53									○			
54												○
55											○	
56						○						

छ : कन्या

ढ : मीन

तुम ज्योतिष और भविष्य बताने वालों से बखूबी परिचित हो। हो सकता है तुमने भी कभी चाहा हो कि परीक्षा में पास होंगे या फेल, यह किसी ज्योतिषी से पूछ लिया जाए। पर सच्चाई क्या है?

वैसे यह कोई नई परंपरा नहीं है। सदियों से ही ज्योतिषियों की समाज पर गहरी पकड़ रही है। राजदरबारों में बाकायदा राजज्योतिषी होते थे, जिनकी स्वीकृति के बिना कोई नया काम शुरू नहीं हो सकता था। उस ज़माने में लोग ज्योतिषियों को सही वैज्ञानिक मानते थे। ऐसा भी कहा जाता है कि खगोल शास्त्र की शुरूआत और प्रारंभिक विकास इन्हीं के माध्यम से हुआ। पर क्या वास्तव में ज्योतिषी आने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी कर सकते हैं? क्या वे केवल नक्षत्रों की स्थितियों के आधार पर लोगों के चरित्र का बिलकुल ठीक-ठीक बखान कर सकते हैं? तुम खुद इस तथ्य की जांच कर सकते हो।

अपने किसी ऐसे मित्र को चुनो जिसे तुम अच्छी तरह जानते हो। अब यहां दी गई सूची को ध्यान से पढ़ो और उन सभी विशेषताओं को नोट करो जो मित्र पर फिट बैठती हैं। उदाहरण के लिए यदि तुम्हें लगता है कि तुम्हारा मित्र **दूसरों का ख्याल रखने वाला** है तो उसके लिए अंक 12 लो।

अब भविष्यवाणी चार्ट को देखो। विशेषताओं की क्रम संख्या बाएं हाथ के कालम में दी गई हैं। अपने द्वारा चुनी गई संख्याओं में से पहली संख्या को इस कालम में ढूंढो। अब उस संख्या के सामने वाली आड़ी कतार में दाईं ओर बढ़ो, जहां गोल चिह्न बना है, वहां ✓ निशान बनाओ। इसी तरह चुनी हुई प्रत्येक संख्या लेकर गोल चिह्न पर ✓ निशान लगाते जाओ।

अंत में पूरे चार्ट पर एक नज़र डालो और वह कॉलम पता करो जिसमें सबसे अधिक ✓ निशान लगे हैं। कॉलन के शीर्ष पर एक अक्षर लिखा है, जो कॉलम की राशि बताता है। यह अक्षर चार्ट के बाहर दिए चित्रों में ढूंढो। यह प्रक्रिया अपने अन्य दोस्तों के साथ भी करो।

अब ज़रा बताओ!

— क्या यही तुम्हारे दोस्त की राशि है?
— क्या तुम्हारे दोस्त की चारित्रिक विशेषताओं की सूची सही निकली?
— तुम्हारी कितनी भविष्यवाणियां सही निकली?
— इतना सब करने के बाद ज्योतिष के प्रति तुम्हारा क्या रुख है?

विशेषताएं

1. परिश्रमी
2. महत्वाकांक्षी
3. मनोरंजक
4. स्पष्टवादी/साफ-साफ बोलने वाला
5. विचार बदलते रहने की प्रवृत्ति
6. चौकस/सावधानी से काम करने वाला
7. आकर्षक/मोहक
8. बातूनी/गप्पी
9. परंपरावादी
10. फूहड़
11. प्रतिस्पर्धी
12. दूसरों का ख्याल रखने वाला
13. हठीला/हमेशा उल्टा सोचने की प्रवृत्ति
14. शांत स्वभाव/ठंडे दिमाग का
15. प्रकृति प्रेमी
16. चालबाज़/धूर्त
17. सृजनात्मक
18. पक्के इरादे वाला
19. सीधी बात कहने वाला
20. हमेशा सपनों में रहने वाला
21. जल्दी उदास हो जाने वाला
22. चंचल/चुलबुला
23. जोशीला
24. हंसी मज़ाक पसंद करने वाला
25. बेकार हल्ला गुल्ला करने वाला/बात का बतंगड़ बनाने वाला
26. उदार
27. तेज़ याददाश्त वाला
28. फिजूल की बर्बादी पसंद न करने वाला
29. लोगों की मदद करने वाला
30. घर को प्यार करने वाला
31. जिज्ञासु
32. कुछ कुछ नया बनाने वाला
33. चिड़चिड़े स्वभाव वाला
34. दयालु
35. घुमक्कड़/घूमना पसंद करने वाला
36. वफादार
37. स्नेही
38. अपनी धुन में रहने वाला
39. सब कुछ व्यवस्थित रखने वाला
40. आशावादी
41. धैर्यवान
42. शांतिप्रेमी
43. अहंकारी
44. हाज़िरजवाब/तुरंत सोचने वाला
45. लापरवाह/दुस्साहसी
46. भरोसेमंद
47. गंभीर स्वभाव का
48. संवेदनशील
49. शर्मीला
50. हकलाने वाला
51. अड़ियल/ज़िद्दी
52. प्यारा
53. बदतमीज
54. दोहरे व्यक्तित्व वाला
55. जिसके व्यवहार के बारे में पहले से कुछ कहा न जा सके
56. स्वास्थ्य की चिंता करने वाला

फगुवा का सवाल

गांव का यह तालाब कितना अच्छा है! बीच में एक स्तम्भ खड़ा है, पक्का सीमेंट का बना। उत्तरी छोर पर पानी पर बिछे हरे चौड़े पत्तों के बीच सुंदर कमल के फूल खिले हैं। बड़का तालाब। इस छोर पर घाट है, पक्की सीढ़ियां बनी हैं। पानी एकदम कांच की तरह। किलकारी मारती छोटी-छोटी मछलियां भी साफ दिखलाई पड़ती हैं। फगुवा का मन करता है कि इसमें उतर कर खूब पौरे। वह आस लगाकर पक्के घाट से कुछ दूर ऊंचाई पर बैठता है और पंडित सुकुल को अपना जनैऊ चमकाते, पानी में तैरते, डुबकी लगाते और ऊपर आते देखता। ब्राह्मण-ठाकुरों की औरतें, लड़कियां भी इस तालाब में नहाने आतीं, गगरी में पानी भर कर ले जातीं।

सुकुलजी तैरते हुए बीच में पहुंच गए हैं और, अब खंभे को पकड़ लिया है। फगुवा देख रहा है पानी में धुला सुकुलजी का गोल गोरा बदन सोने-सा दमक रहा है। उनकी पीठ और छाती पर बिछलती पानी की बूंदें सूरज की किरणों में मोती के समान चमक रही हैं। सुकुलजी मौज़ में पानी में चित पड़ते हैं तो उनकी तोंद अपनी पूरी गोलाई में ऊपर आ जाती है—कित्ता बड़ा पका कुम्हड़ा! फगुवा की फिक् से हंसी छूट जाती है। और पंडितजी की निगाह उस पर पड़ जाती है। वे एक हाथ से खंभे को जकड़े रखकर दूसरे हाथ को हवा में उछालते हुए गालियों की बौछार मारते हैं 'भक् बे भंगी का छोरा! हिंया ई पवित्तर तालाब को गंदा करने कहां से आ टपका बे! भक् जल्दी से, तेरी हवा लगने से भी पानी में गोबर छिंटना पड़े... भक्, गांव के बाहरी तुम्हार तालाब है, जायके हुवां खूब निहाव, खूब पौरो।' और पानी में संतुलन बनाने के लिए उनकी टांगें आगे-पीछे चलने लगती हैं।

डर कर फगुवा लंगोटी का पिछला छोर हवा में उठाए तेज़ी से चौकड़ी भरता है—दुम उठाकर भागता हुआ जानवर हो जैसे। पंडित जी

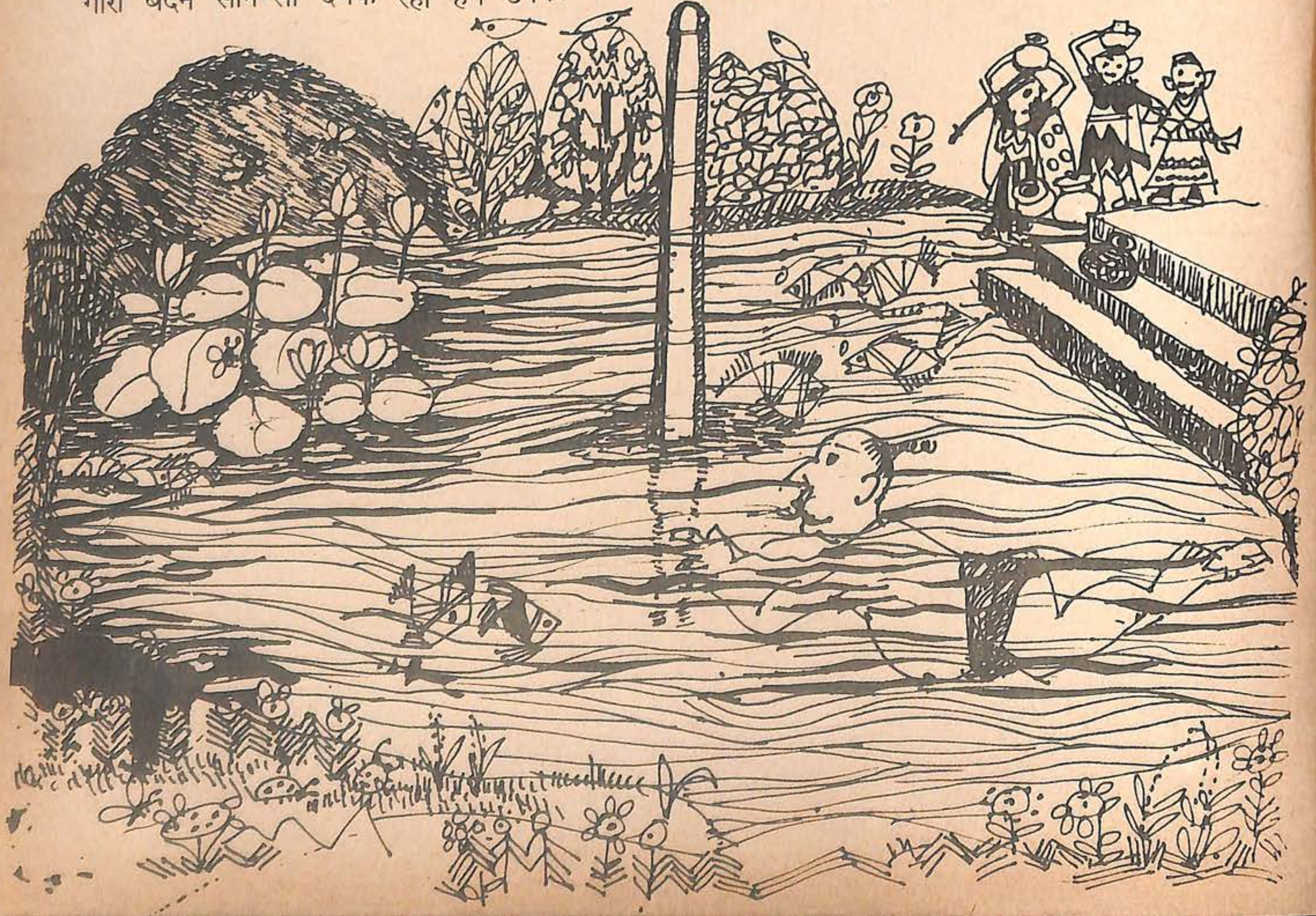

यह देखकर खें खें करके हंस पड़ते हैं। थोड़ी दूर तक भागकर फगुआ रुक जाता है फिर पीछे मुड़कर देखता है, पंडित सुकुल की भैंसें पश्चिमी छोर पर एक के बाद एक उतर रही हैं पानी में, और सुकुलजी का हरवाहा डंडे से उन्हें बटोर कर तालाब में हंकाल रहा है। सुकुलजी बीच तालाब से ही उन्हें चुमकार रहे हैं 'पुच् पुच्—आ-हे-हे-अ..., और भैंस अधमुंदी आंखों से पानी की ठंडक का मज़ा लेतीं, कभी पूरा सिर पानी में डुबोतीं, कभी पानी से ऊपर रखतीं तैरते हुए पंडित के पास पहुंच जातीं हैं—एक के पूंछ से दूसरा मुंह सटाए कतार में। पंडित सुकुल एक भैंस की पूंछ पकड़े उसके पीछे पौरने लगते हैं और तालाब के इस छोर से उस छोर तक अपनी भारी भरकम देह लेकर पहुंच जाते हैं।

फगुवा देखता है, उनमें और भैंस में फर्क केवल रंग का ही है। वह अपने शरीर को देखता है। उसके बदन पर कहीं भी तो कोई मैला नहीं है, फिर उसके बाप-महतारी तो अब खेत-मजूरी का काम करते हैं। आदमी का मल-मूत्र साफ करने पर भी साबुन से हाथ धो डालते हैं। डाक्टर लोग भी तो कितना गंदा छूते हैं। ई सुकुल पंडित का लड़का ही तो गांव में डाक्टरी करता है। वो तो उसके मुहल्ले के बीमार बच्चे की गंदगी भी हाथ में लग जाने से साबुन से हाथ धोकर पवित्र हो जाता है तो फिर उसकी चमड़ी हमेशा अपवित्र क्यों बनी रहती है? उसका गुनाह यही है कि उसने भंगी जात में जनम लिया है। मगर भंगी जात में जनम लेना न लेना उसके वश की बात है क्या? उसकी नसों में कोई अपवित्रता बहती है क्या, या कि उसके खून का रंग ही काला है कि वह भैंसों से भी गया बीता है! वो तो आदमी है कम से कम, ये तो जानवर हैं। तो क्या आदमी की जात जानवर की जात से भी नीची है?

फगुवा चाहता है कि सुकुल पंडित से इन सवालों का जवाब पूछे, पर वो तो पास ही नहीं फटकने देते। उनको तो उसके साये से ही नफरत है। बाबू-माई से पूछने पर टाल देते हैं एक फीकी हंसी हंसकर तू अभी छोटा है, तू नहीं समझेगा ई सब बात।

पर इससे उसके मन को तसल्ली नहीं होती। किससे पूछे इस सवाल का जवाब? आखिर किससे पूछे?

□ शीतेन्द्रनाथ

सभी चित्र : शोभा घारे

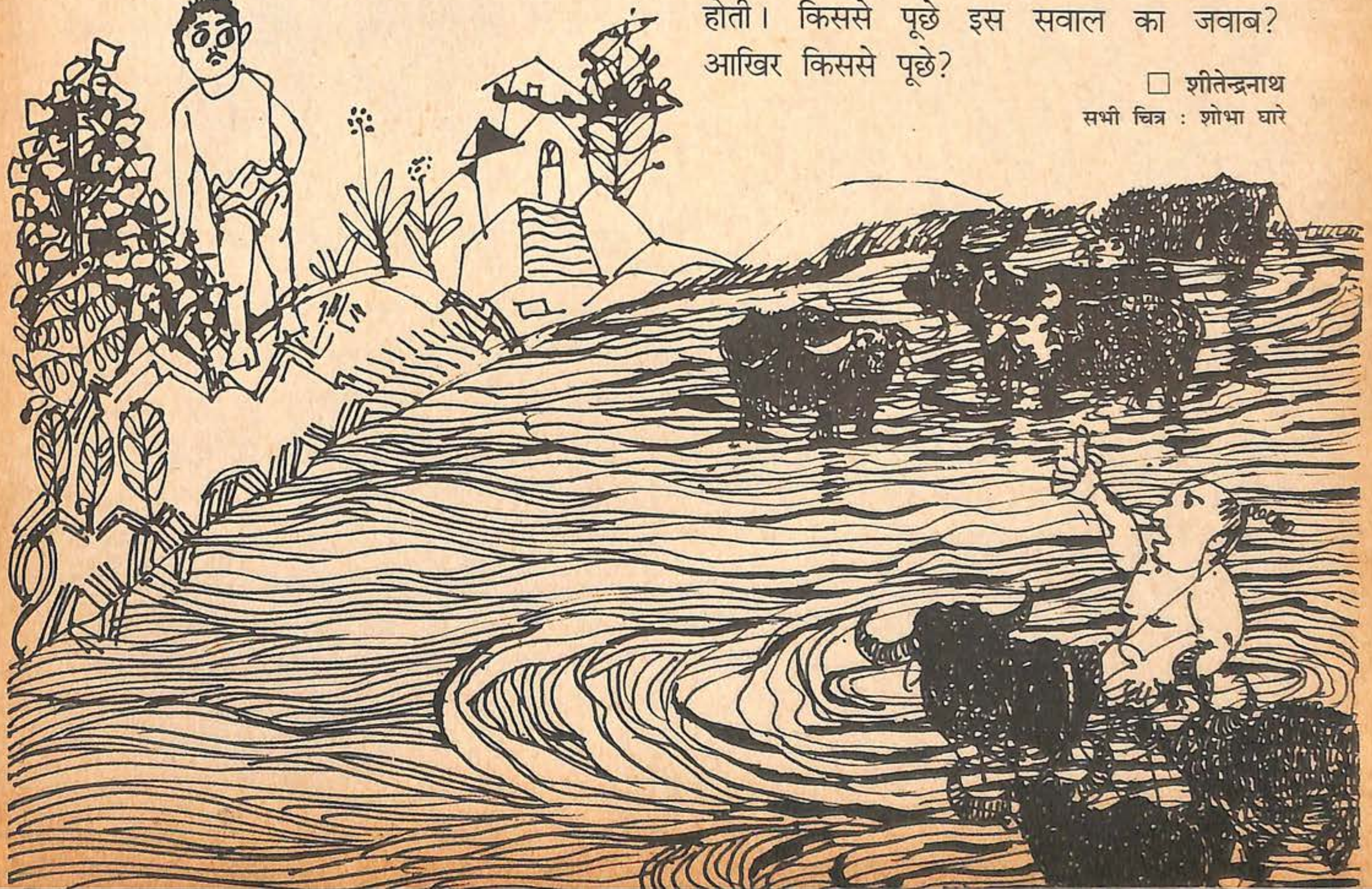

मोर

तुम्हें यह तो पता होगा कि हर देश का अपना एक झंडा और एक राष्ट्रीय गीत होता है। इसी तरह कई देश कुछ पशुओं, पक्षियों, फूलों आदि को भी अपना राष्ट्रीय प्रतीक चुन लेते हैं। शायद तुमने यह भी सुना होगा कि हमारे देश का राष्ट्रीय पक्षी मोर है। भारत में पाए जाने वाले पक्षियों में शायद सबसे सुंदर, रोबीला और अपनी ओर ध्यान आकर्षित करने वाला पक्षी है यह। वर्षा ऋतु के प्रारंभ में पूंछ के पर फैला कर नाचने वाला मोर एक बिरला और सुंदर दृश्य प्रस्तुत करता है, जो सदियों से कवियों को प्रेरित करता आ रहा है।

परंपरा के अनुसार विभिन्न देवी-देवताओं के साथ संबंधित होने के कारण इसे एक पवित्र पक्षी भी माना जाता है। इन धार्मिक मान्यताओं के कारण अन्य पक्षियों की तुलना में मोर अधिक सुरक्षित होते हैं और इनके झुंड प्रायः देहातों और कस्बों में निर्भयतापूर्वक घूमते देखे जा सकते हैं। इस तरह मूल रूप से जंगल की झाड़ियों में छिपकर जीवन बिताने वाला यह पक्षी धीरे-धीरे आबादी वाले इलाकों में भी रहने लगा है। राष्ट्रीय पक्षी घोषित कर दिए जाने के बाद तो मोर को पकड़ना या उसका शिकार करना क़ानूनी अपराध बन गए हैं।

मोर और मोरनी के रंगरूप में काफी अंतर होता है। मोर की पूंछ में चमकीले, सुंदर लंबे और रंग-बिरंगे पर होते हैं और सिर, गर्दन तथा पेट का रंग चमकीला गहरा नीला होता है। मोरनी के शरीर का रंग मटमैला होता है। पूंछ के पर भी इतने लंबे और सुंदर नहीं होते जितने कि मोर के। नर और मादा दोनों के सिर पर छोटे-छोटे परों का एक तुर्रा होता है।

मोर के भोजन में विभिन्न प्रकार की चीज़ें सम्मिलित हैं, जैसे अनाज, छोटे पौधे, कीड़े, गिरगिट, सांप आदि।

वर्षा ऋतु के प्रारंभ में मोर अधिक सक्रिय हो जाते हैं क्योंकि यही इनका प्रजनन काल होता है। वर्षा के आते ही नर ऊंची आवाज़ में पुकारते हैं। आवाज़ कुछ-कुछ बिल्ली की 'म्याऊं' की आवाज़ से मिलती-जुलती है। लेकिन उससे कहीं अधिक कर्कश और लंबी होती है। आमतौर पर एक मोर के साथ चार-पांच मोरनियों का झुंड होता है।

मोर के साथ जुड़ी तमाम कपोल-कल्पनाओं में से एक यह है कि जब मोर नाचता है तब वह अपनी बदसूरत टांगों को देखकर आंसू बहाता है। इन आंसुओं को मोरनियां चुगती हैं और इसके बाद वे अंडे देती हैं। वास्तव में यह एक कपोल-कल्पना ही है, इसमें तनिक भी सच्चाई नहीं है।

मोरनियां प्रायः घनी झाड़ी की ओट में ज़मीन में उथला गड्ढा बनाकर उसमें तिनकों और पत्तियों से घोंसला बनाती हैं। एक मोरनी उसमें 3 से 5 तक हल्के पीले रंग के अंडे देती है। अंडे सेने का काम भी मोरनी करती है।

क्या तुम अनुमान लगा सकते हो कि मोर की तुलना में मोरनी का रंग कम भड़कीला और मिट्टी के रंग से अधिक मिलता-जुलता क्यों होता है? ऐसा कई और भी पक्षियों में होता है। इसका कारण यह है कि मादा को अंडे सेते समय एक ही स्थान पर बैठे रहना पड़ता है। ऐसी स्थिति में मादा को शिकारी जानवरों से हमेशा ख़तरा बना रहता है। यदि इसके रंग भड़कीले होते तो इसे देखना और भी आसान होता। इस तरह ख़तरा और भी बढ़ जाता। मटमैले रंग के कारण घोंसले में बैठी मादा को देखना कठिन होता है।

□ अरविंद गुप्ते

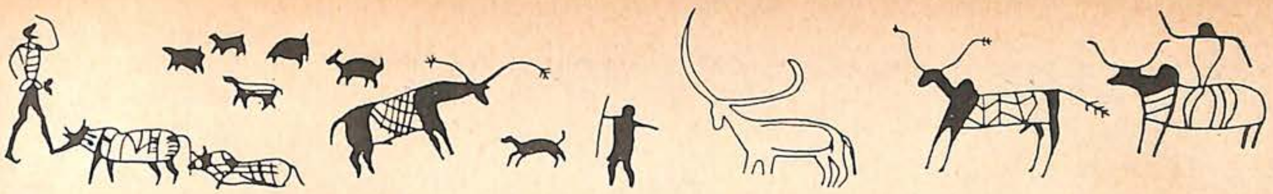

कौन मानव और कौन जानवर!

बहुत समय पहले, मतलब हज़ारों साल पहले, पृथ्वी पर जगह-जगह घने जंगल थे। इन जंगलों में अन्य जानवरों के साथ-साथ मानव भी रहते थे। यह तब की बात है जब खेती भी नहीं होती थी। मानव और जानवरों के बीच निरंतर लुका-छुपी चलती रहती थी, क्योंकि तब का मानव शिकारी मानव था, मतलब वह जानवर का शिकार करके ही भोजन प्राप्त करता था। शिकार करने का तरीका भी अनोखा था। एक जानवर को मारने के लिए कई लोग मिलकर पत्थर के औज़ारों से वार करते थे। कुछ जंगली कंद-मूल भी उसके भोजन के स्रोत थे।

इस प्रकार तब के जीवन में एक तारतम्य था। भोजन की एक कड़ी-सी थी, जिसमें बड़े जानवर अपने से छोटे और कम शक्तिशाली जानवरों को अपना भोजन बनाते थे। लेकिन अपने से छोटों को भोजन बनाने के इस तरीके में भी एक प्राकृतिक चक्र था, जिसमें किसी भी जाति के नष्ट होने की संभावना बहुत कम थी।

इस चक्र को बिगाड़ा मानव ने। पहले तो खेती करने के लिए जंगल काट डाले। इससे अनेक जानवरों का घर उजड़ गया। बेघरबार वे एक-से दूसरे जंगल में भागते रहे। अब कोई भी जंगल जानवरों की एक निश्चित आबादी को ही आश्रय, सहारा दे सकता है। इसलिए जब जानवरों की आबादी, आश्रय देने की क्षमता से अधिक होने लगी तो प्रकृति में उनकी संख्या को कम करने के तरीके भी विकसित होने लगे। एक जानवर अपनी ज़रूरत से अधिक जानवरों का शिकार करने लगा या कुछ जातियां इस नए वातावरण के अनुकूल नहीं बन पाईं और नष्ट होने लगीं। लेकिन दूसरी तरफ मानव जाति की आबादी बढ़ती गई। हालांकि अब उसकी भूख के लिए खेती एक बड़ा स्रोत बन गया था, जानवरों की ज़्यादा ज़रूरत नहीं रही थी। कुछ जानवरों को उसने पालना भी सीखा—गाय, बकरी, भेड़, कुत्ता आदि। एक तरह से जानवरों का बंटवारा हो गया—उपयोगी और अनुपयोगी। धीरे-धीरे ये अनुपयोगी जानवर, जो पहले मनुष्य के जीवन का सहारा थे—भोजन के रूप में—अब एक समस्या बनने लगे। क्योंकि ये जानवर, पालतू जानवरों को खा जाते थे या फिर फसल को नुक़सान पहुंचाते थे। मानव ने बड़े पैमाने पर ऐसे जानवरों को ख़त्म करना शुरू किया। अब तक तो हथियारों में भी 'उन्नति' हो गई थी। पत्थर के हथियारों की जगह लोहे जैसी धातुओं के हथियार इस ख़ातिमे वाले काम में कहीं आगे थे।

यह प्रक्रिया निरंतर चलती रही। बंदूक के आविष्कार से शिकार और भी आसान हो गया।

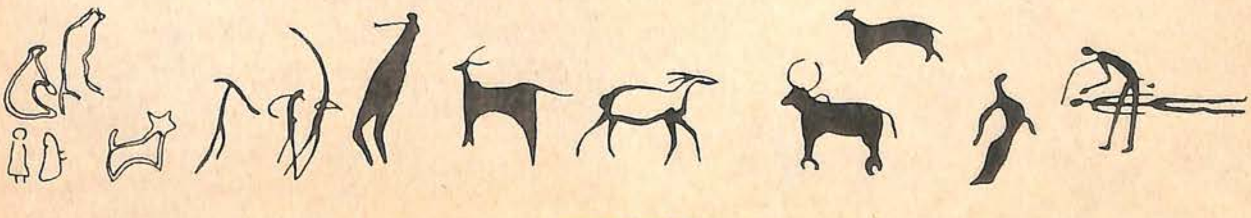

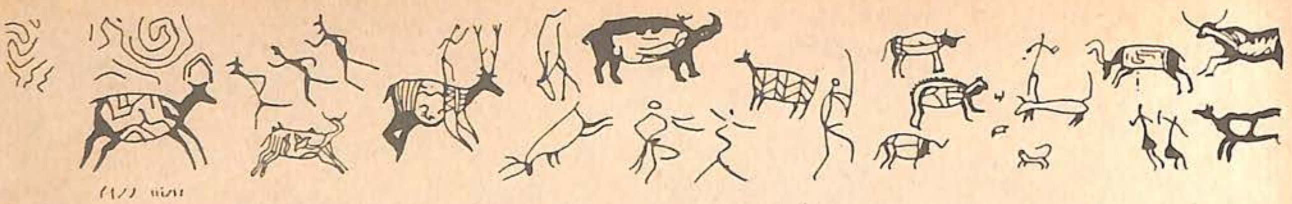

एक ज़माना था कि मानवों का झुंड पत्थर के औज़ारों से कभी-कभी बड़े जानवरों को मारने में सफल हो जाता था। लेकिन एक रायफल से एक अकेला व्यक्ति साल भर में सौ-दो सौ शेरों का शिकार कर बहादुर कहलाने लगता। इस प्रकार जानवरों को भोजन के लिए मारने वाली परंपरा रायफल का एक खेल बन गई।

इस सब का नतीजा आज सामने है। अनेक जीव-जंतुओं की प्रजातियां अब इस पृथ्वी पर नष्ट हो गई हैं या नष्ट होने के कगार पर पहुंच गई हैं। जब जंगल ही ख़त्म हो रहे हैं तो जानवर कहां जाएंगे? लेकिन मानव बड़ा 'दयालू' है। उसने सोचा यह तो अच्छी बात नहीं है कि हमारे बच्चे किसी बड़े जानवर को कभी देख ही न पाएं। और बच्चों को बचे-खुचे जंगलों में ले जाना भी कम ख़तरनाक नहीं है। कहीं जानवर ही न खा जाएं। तो क्यों न जानवरों को क़ैद कर लें। इससे वे अपने शहर के आसपास ही उपलब्ध होंगे और बिना किसी डर के उनका नज़ारा किया जा सकेगा।

जब कोई व्यक्ति सरकार द्वारा दंडित किया जाता है तो उसे जेल में बंद कर दिया जाता है। इस जेल को आज भी सज़ा भुगतने की जगह के रूप में ही जाना जाता है। इन्हें कोई भी मानवघर नहीं कहता है। लेकिन जानवरों की जेल को मानव ने नाम दिया है—चिड़ियाघर। कभी इन जानवरों से भी पूछा जाए कि क्या उन्हें यह जेल वाकई घर जैसी लगती है?

और जानवरों की चिंता तो कोई नहीं करता, पर हां कुछ साल पहले देश में एक चिंता लहर चली थी कि भारत के गौरव बाघ (टाईगर) लुप्त होने के कगार पर पहुंच गए हैं। सब तरफ हाहाकार मच गया। सोच-विचार शुरू हुआ। और फिर करोड़ों की लागत वाली एक योजना शुरू की गई—'ऑपरेशन टाईगर'। इस योजना में बचे हुए बाघों को शिकार होने से बचाने तथा उनके बच्चों को सुरक्षित रूप से बढ़ने की व्यवस्था की गई है। अब कहा जाता है कि बाघों की जनसंख्या... अरे गलती हो गई... बाघसंख्या बढ़ गई है।

कुछ वर्ष पहले हम उड़ीसा में भुवनेश्वर शहर गए थे। भुवनेश्वर के पास एक चिड़ियाघर है। लेकिन यह चिड़ियाघर कुछ अलग तरह का है। यहां पर जानवरों को, ख़ासकर शेरों व बाघों को एक छोटी जगह या पिंजरे में रखने के बजाए दूर-दूर तक फैले एक बड़े बाड़े में रखा गया है। नंदनकानन नाम के इस चिड़ियाघर को ख़ासकर सफेद बाघों की संख्या बढ़ाने के लिए जाना जाता है। इस चिड़ियाघर के कुछ दृश्य हमने कैमरे में कैद कर लिए। आओ तुम भी देख लो...!

लेख एवं रंगीन पारदर्शियां : विनोद रायना

(श्वेत श्याम चित्र वाइल्ड एनीमल्स, नेशनल ज्योग्राफिक एनीमल बिहेवियर तथा वाइल्ड इंडिया से साभार)

नंदनकानन में पीले बाघ भी हैं,
पर वह मशहूर है सफेद बाघों के लिए!

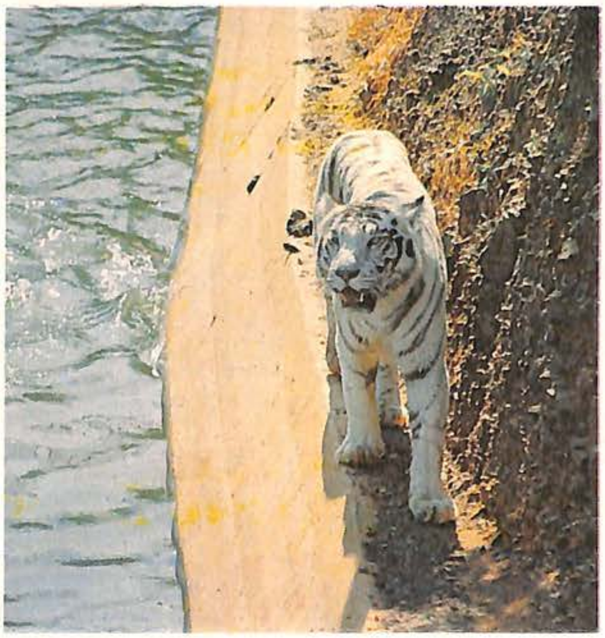

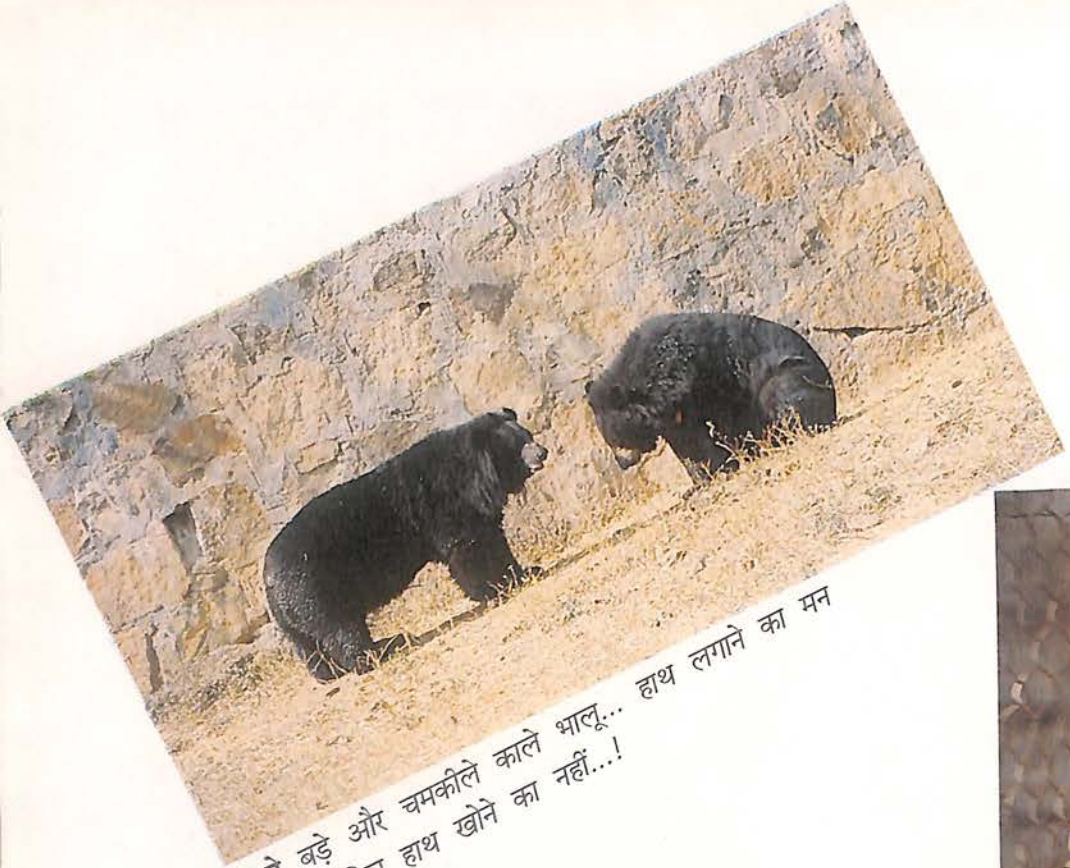

इतने बड़े और चमकीले काले भालू... हाथ लगाने का मन करे... लेकिन हाथ खोने का नहीं...!

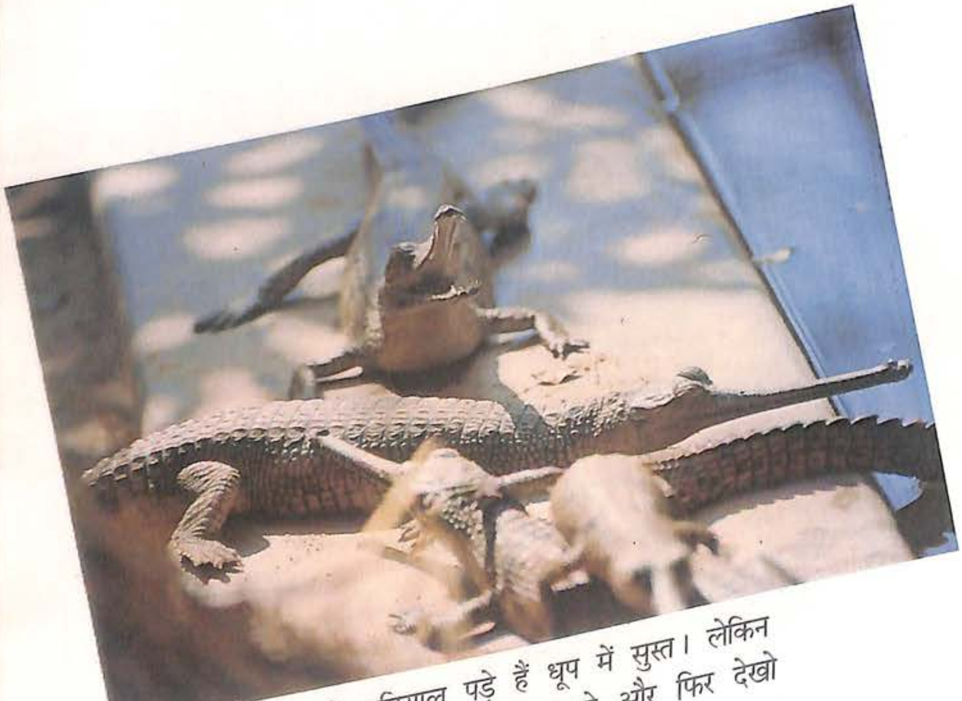

यहां देखो खूब सारे घड़ियाल पड़े हैं धूप में सुस्त। लेकिन खाने की कोई चीज़ उनके पास ले जाओ और फिर देखो उनकी फुर्ती!

ये तेंदुए जी तो पिंजरे में ही बंद थे। वह
दिया जाता है।

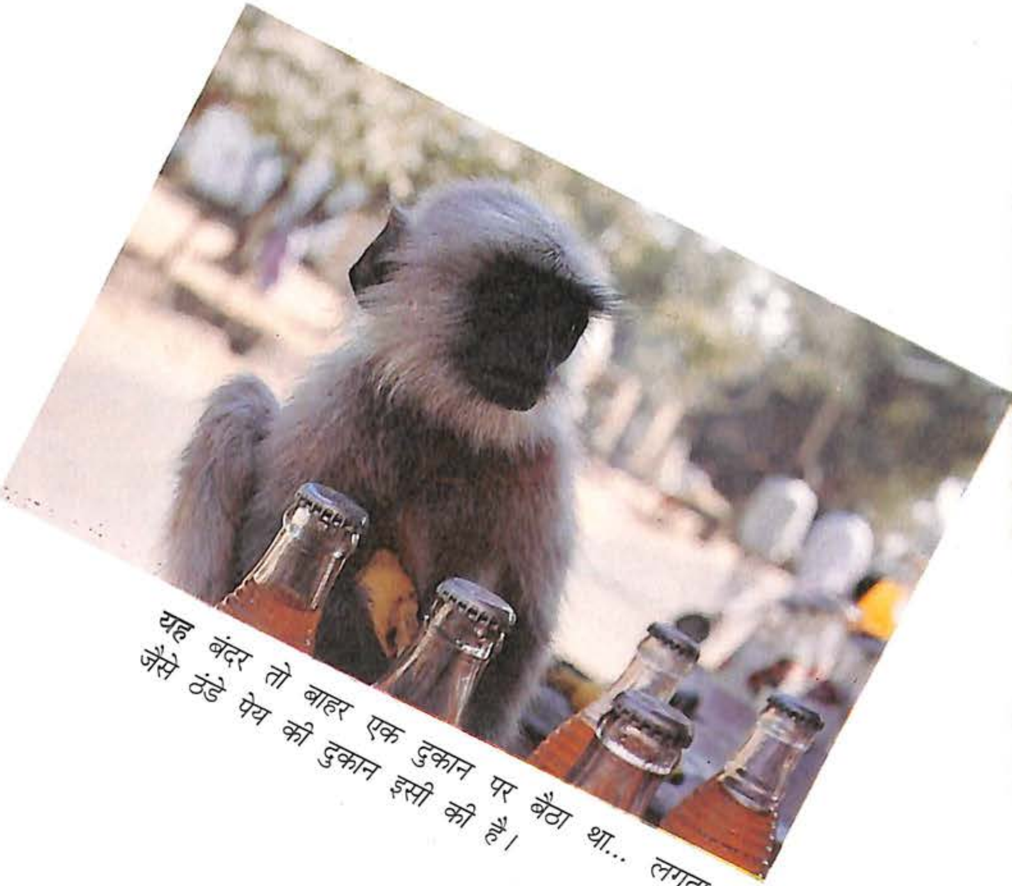

यह बंदर तो बाहर एक दुकान पर बैठा था... लगता था जैसे ठंडे पेय की दुकान इसी की है।

ं उन्हें खाना-पानी

भालू मस्त हैं अपनी मस्ती में!

नंदनकानन के शेरों के सफारी पार्क में दर्शक एक गाड़ी में बैठकर सैर करते हैं। सड़क के इर्द-गिर्द एक बड़े इलाके में शेर खुले घूमते हैं। हमने देखा, दो शेर सड़क के बिलकुल पास सो रहे हैं। सोचा कैसे जगाएं...! हम लोग ज़ोर से चिल्लाने लगे...!

वे जाग गए और हमें उनीदीं आंखों से देखने लगे। हम लोगों ने और शोर मचाया। और जब उनकी आंखों की नींद ही उड़ गई तो भैया चिल्लाना बंद और भागना शुरू...! (पिछला आवरण भी देखो)।

ये तो थे नंदनकानन के कुछ निवासी। दुनिया में और भी तरह-तरह के जानवर हैं आओ उनसे भी मिलते हैं।

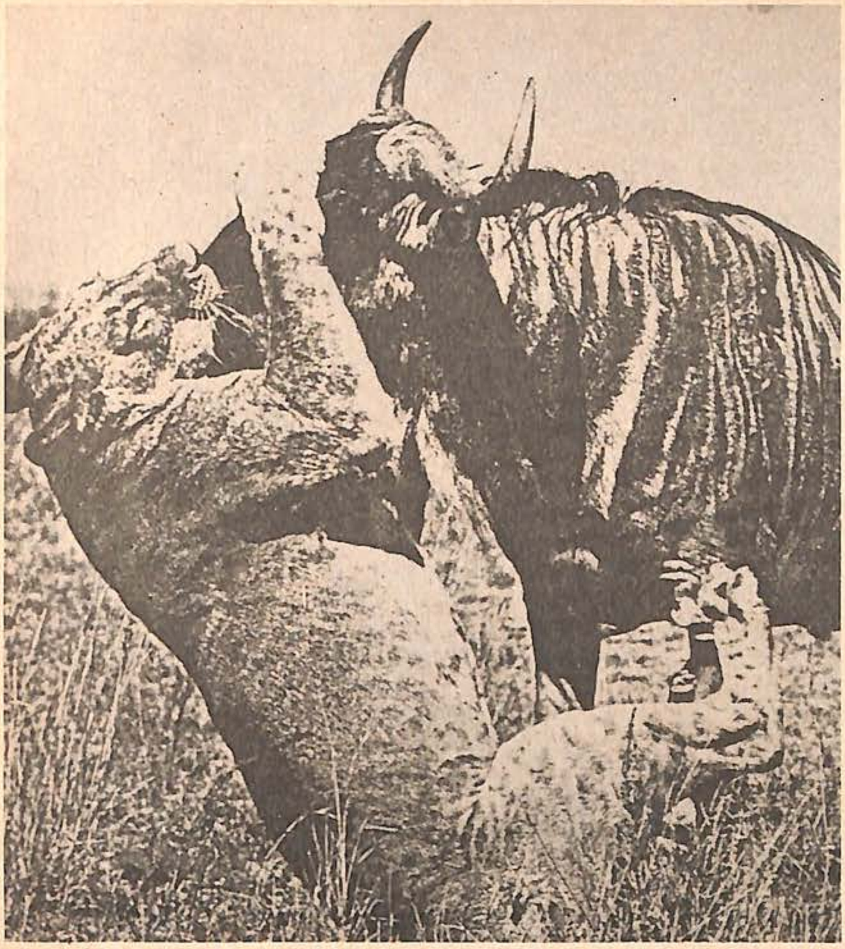

शिकार करना सीख़ रहे हैं सिंह के बच्चे। शिकार है एक जंगली भैंसा। पहले सिंह के एक बच्चे ने सामने से वार किया।

अब दूसरा बच्चा भी पीछे से शिकार पर लपक पड़ा। परिवार के मुखिया सिंह जी केवल शिकार को दबाकर रखे हैं। सिंहों में भी 'खाना बनाने' की वही परंपरा है जो अधिकांश मानव जातियों में है। नर सिंह भी शिकार मारने में कोई ख़ास मदद नहीं करता। यह ज़िम्मेदारी मादा सिंह पर ही होती है। लेकिन एक दफ़ा शिकार हो गया तो नर ख़ूब मस्ती से खाता है।

ब्लेकबक के नाम से जाना जाता है यह सुंदर हिरण!

बाघ : रणथंभोर, राजस्थान में।

हिरण चाहे ज़मीन पर भागे, चाहे पानी में, मुझ से नहीं बच सकता।

बाघ : कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में। भोजन तो हो गया... अब पानी पी लूं!

बारहसिंघा हिरणों का एक झुंड दुधवा राष्ट्रीय उद्यान में। किसी आहट पर (शायद फोटोग्राफर की) सब चौकन्ने हो गए हैं।

चींटीखोर... यह अब लगभग ख़त्म ही होने वाला है। इसके पूर्वज अमरीका में पाए जाते थे और हाथी जितने बड़े होते थे। इसके दांत नहीं होते हैं, पर इसकी जीभ डेढ़ फुट लंबी होती है और यह चींटियों व दीमकों का भोजन करता है।

कितने मज़ेदार कान हैं इसके... इसे फनिक कहते हैं। रेगिस्तान की लोमड़ी के नाम से भी जाना जाता है। यह अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान में पाई जाती है। इसे कुछ लोग पालते भी हैं।

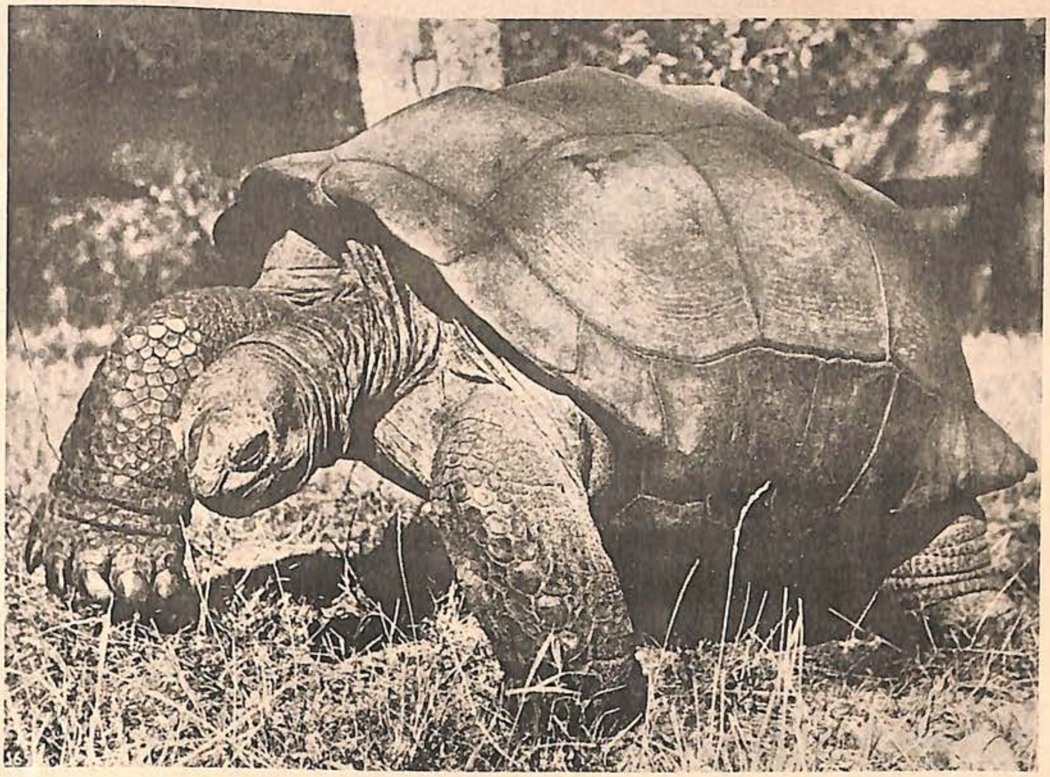

ये भीमकाय कछुए भूमध्य रेखा पर गेलेपेगोस द्वीप पर पाए जाते हैं। तीन फुट ऊंचे होते हैं।

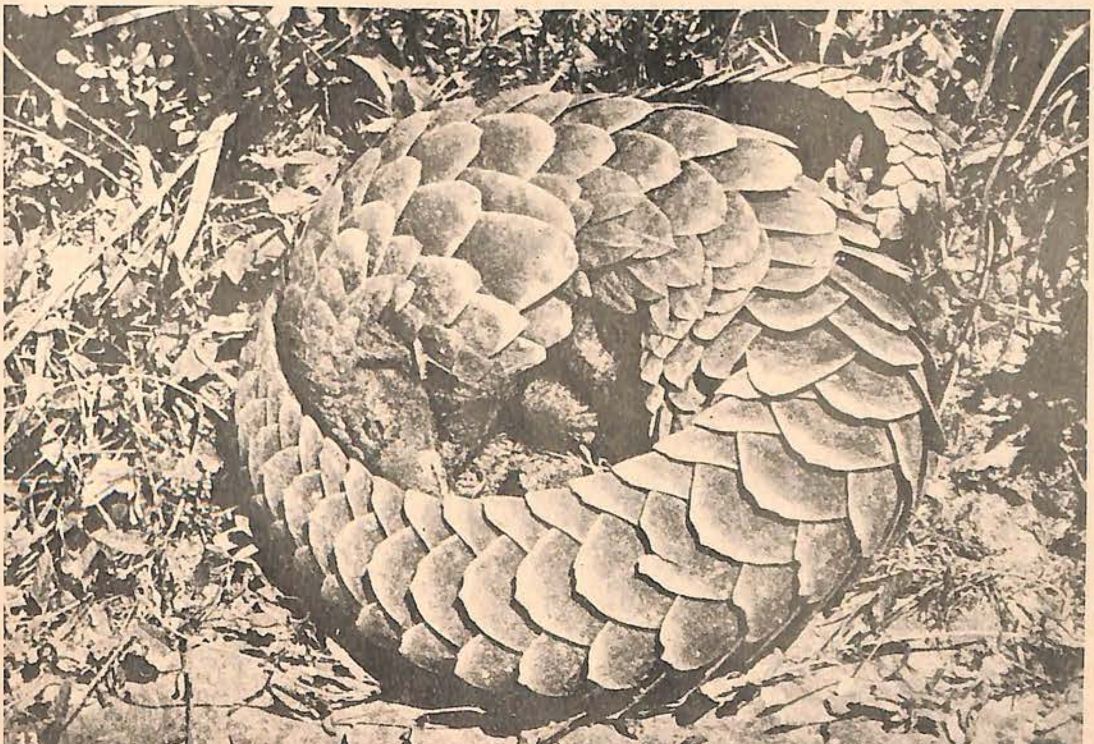

इन महाशय को पेंगोलिन कहा जाता है। देखने में किसी देवदार वृक्ष से गिरा हुआ कोन जैसा दिखता है।

मेरा नाम है लोरिस!

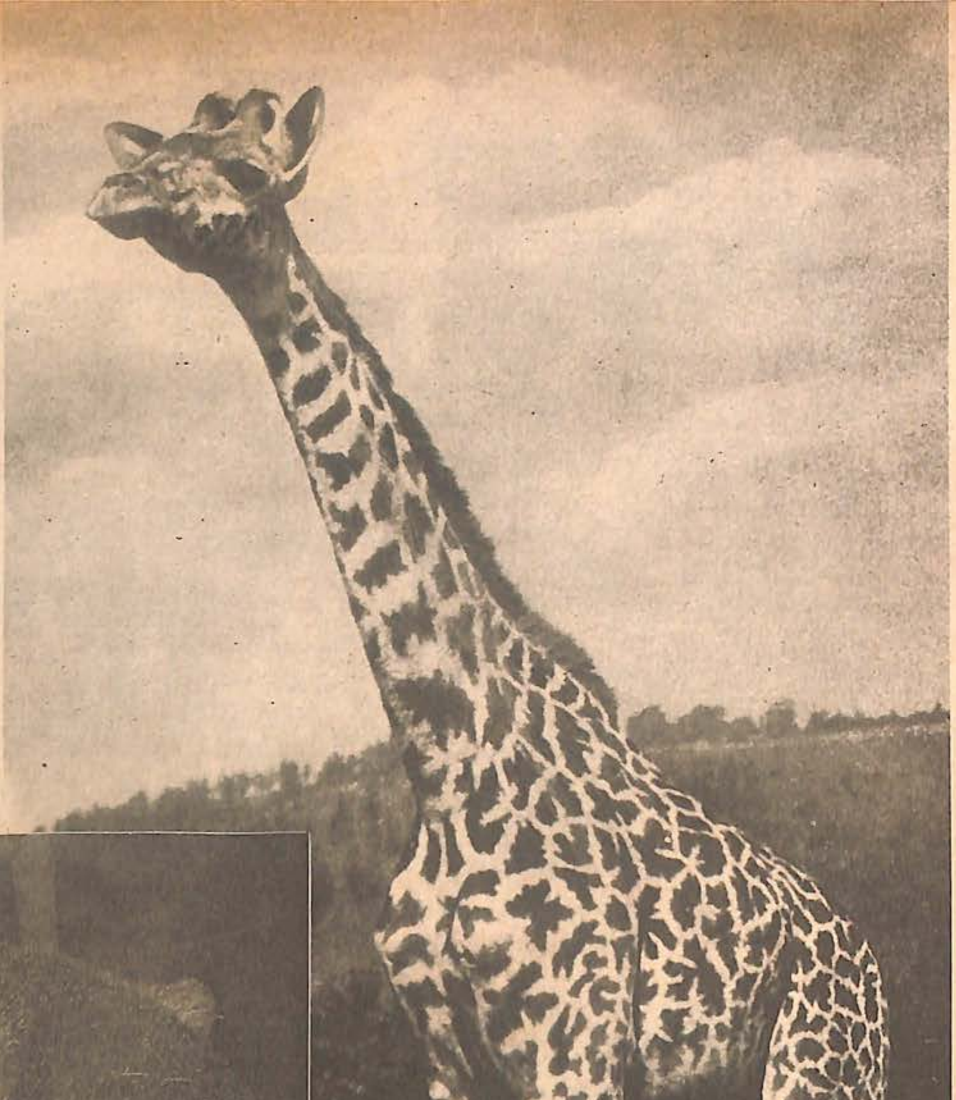

जिराफ को तो तुम पहचानते ही हो। इन जनाब की एक लात पड़ जाए तो शेर भी मर जाए!

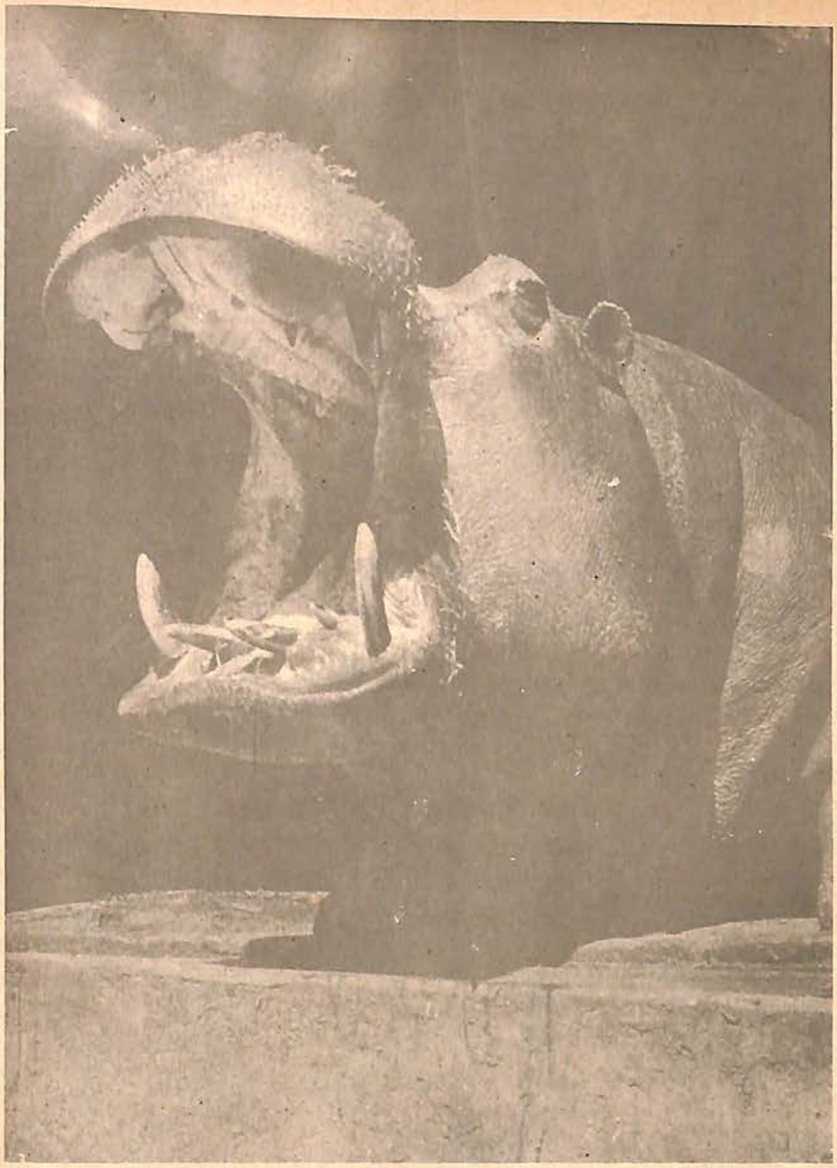

हिप्पो जो खूब बड़ा जानवर है। मुंह ऐसे फाड़ रहा है जैसे आठ-दस लोगों को अभी निगल जाएगा। घबराओ मत... यह तो शाकाहारी है।

गेंडे महाशय हाथी के बाद सबसे बड़े जानवर हैं। हमारे देश में अधिकांश गेंडे काज़ीरंगा, असम में पाए जाते हैं। देखो तो, इनकी पीठ पर कौन विराजमान है।

माथापच्ची

(1)

1 से 16 तक के अंक लो। इनसे आठ जोड़ियां बनाओ। पर जोड़ी ऐसी बननी चाहिए कि हर जोड़ी के अंकों का योग किसी अंक का वर्ग हो। जैसे 1 और 3 का योग 4 है, जो 2 का वर्ग है। इसी प्रकार 5 और 11 का योग 16 है जो 4 का वर्ग है।

अगर 1 से 16 तक के अंकों की जोड़ियां शर्त के अनुसार बना लो, तो फिर इसी तरह 1 से 20 तक के अंकों की जोड़ियां भी बनाओ—पर याद रहे, सभी जोड़ियों के योग वर्ग संख्या होने चाहिए।

(2)

मन ही मन हिसाब लगाओ कि एक वर्ग मीटर के सभी मिलीमीटर भुजा वाले वर्गों को एक कतार में सटा-सटा कर रखने पर कतार कितनी लंबी होगी?

(3)

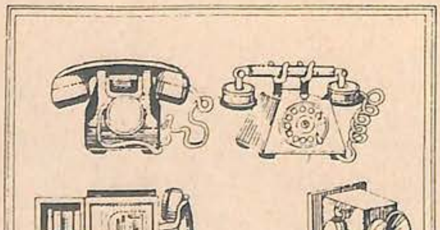

तरह-तरह के छह टेलीफोन हैं ये। इनमें कोई ऐसा गुण ढूंढो जिसके आधार पर इन्हें एक क्रम दिया जा सके।

(4)

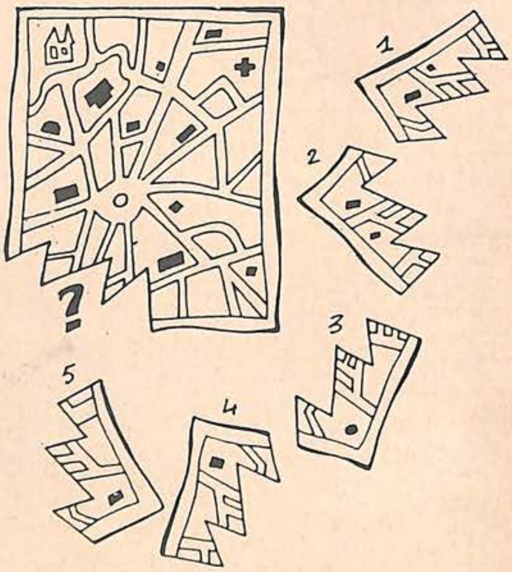

यह एक गांव का नक्शा है। उसका एक सिरा फट गया है। यहां चार टुकड़े दिए गए हैं सही टुकड़ा नक्शे में जोड़ो।

(5)

मन ही मन यह हिसाब भी लगाओ कि एक घन मीटर के सभी मिलीमीटर भुजा वाले घनों को एक के ऊपर एक रखने पर कितना ऊंचा स्तंभ मिलेगा।

वर्ग पहेली 23 : हल

बाएं से दाएं : 4. केवल 6. मेहनतकश 7. पायल 9. सुनाना 11. जगमग 12. यथावत 13. मशक 15. सपाट 18. असगरअली 19. अकाल

ऊपर से नीचे : 1. आमेर 2. ऐनक 3. हकलाना 5. वन्य जीवन 8. नगर पालिका 9. सुखद 10. नायक 14. शवासन 16. शरद 17. सलीब

भारिया जनजाति की कुछ पहेलियां यहां दी गई हैं। बूझो तो! हां, एक संकेत हम ही दे देते हैं—ये सभी किसी न किसी जीव-जंतु से संबंधित हैं।

आकड़ कोकड़ दस पैंया
आंख नटेरे तो मूढ़ नहीं।

●

कत्था नहीं, सुपारी नहीं
मुंह कैसे लाल चट
पानी नहीं कांजी नहीं
दूबा हरो कच!

●

हल्दी जैसी गठान
चाट चूम लो तो हरे मोरे राम!

●

महल के ऊपर महल
ऐसा कैसा कारीगर
बिन पानी का बनाए महल

●

अंब गड़े और खंब गड़े
बसूला जैसी धार
ऐसे मंदिर कौन गढ़े
जिनके औंधे द्वार?

●

आए हो तो बैठिहो, बिन बैठे ने जाओ
सिरा-पाटी छोड़ के, खटिया बिनखे जाओ।

●

तन्नकसी दुरिया
चांद गुटान
उठा-उठा पटकै
बड़े-बड़े जुवान!

●

एक कुआ में गल-गल ब्यानी
उसकी तेली बहुत मिठानी!

(चौमासा से साभार)

वर्ग पहेली : 24

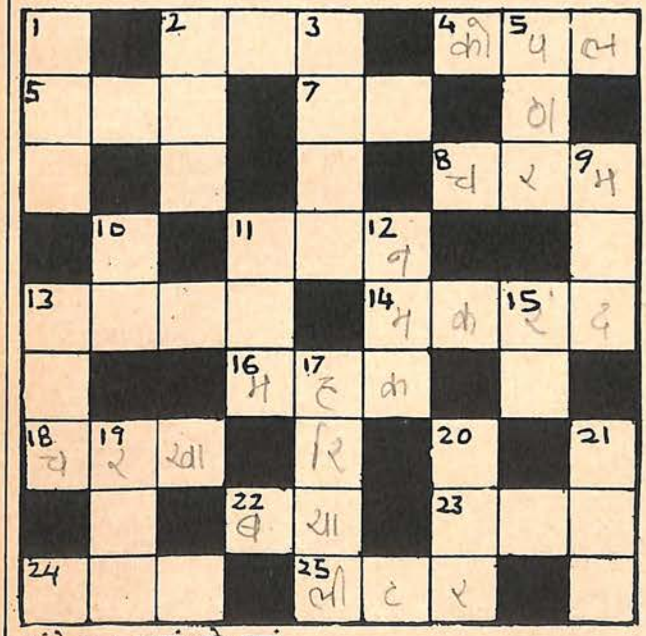

संकेत : बाएं से दाएं

2. एक धातु जिसे तांबे में मिलाकर पीतल बनाते हैं (3)
4. आपको पलक में अंकुर मिलेगा (3)
6. गड़बड़ लगन का पिघलना (3)
7. उल्टे हमले का कण (2)
8. अचर मचर में सर्वोच्च (3)
11. आवेशित कण न आय के बाद (3)
13. भारतीय चिकित्सा पद्धति (4)
14. उल्टे दम में उल्टा रंक (4)
16. आम हक़ में छुपी बात नाक को मालूम है (3)
18. सूत कातने का यंत्र (3)
22. शीतल बयार में पक्षी (2)
23. भारतीय वैज्ञानिक जिन्होंने अणु की बात शुरू की (3)
24. उस पार दलदल में धातु (3)
25. उल्टी-सीधी रट ली? अब नापो इससे (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. कुशलग्रह (3)
2. पैदा करने वाला (3)
3. ध्वनि का एक गुण सितार व्यसन के अंदर (4)
5. ऊंची-सी सपाट जगह (3)
9. सड़ते घाव में क्या होता है (3)
10. सिर के बल खड़ा जवान, गैसों का मिश्रण (2)
11. एक फल में दरख़्त का सिर, प्रथम पुरुष (3)
12. भीगा क सामान्य लवण (3)
13. कुरान में चतुर्भुज (3)
15. लाल, पीला, हरा और जाने कौन सा... (2)
17. बरसात के बाद चारों तरफ... (4)
19. असामान्य रकम का श्रोणि प्रदेश (3)
20. और उसी की राशि (3)
21. बुरे न का तन (3)

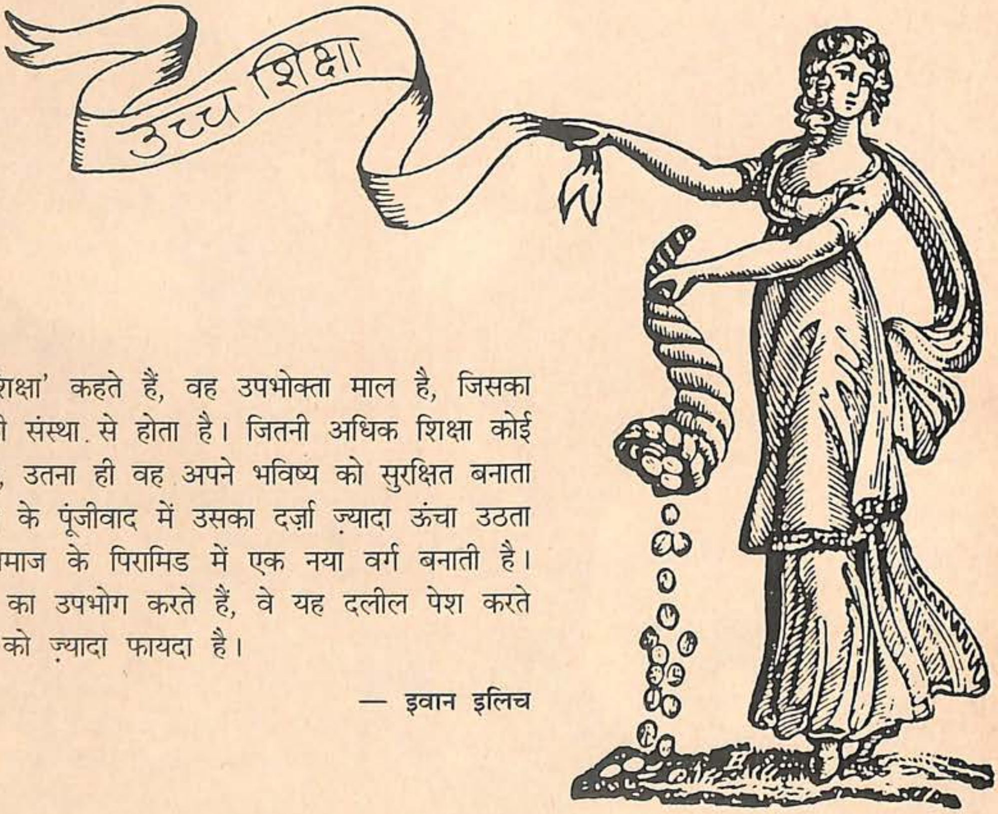

जिसे हम आजकल 'शिक्षा' कहते हैं, वह उपभोक्ता माल है, जिसका उत्पादन 'स्कूल' नाम की संस्था से होता है। जितनी अधिक शिक्षा कोई व्यक्ति उपभोग करता है, उतना ही वह अपने भविष्य को सुरक्षित बनाता है। साथ ही साथ ज्ञान के पूंजीवाद में उसका दर्ज़ा ज़्यादा ऊंचा उठता है। इस तरह शिक्षा समाज के पिरामिड में एक नया वर्ग बनाती है। और जो अधिक शिक्षा का उपभोग करते हैं, वे यह दलील पेश करते हैं कि उन्हीं से समाज को ज़्यादा फायदा है।

— इवान इलिच

जब कुछ ही लोगों को डिप्लोमा और डिग्री मिलती है, बाकी को नहीं; जब संपन्नों की संस्कृति ही मेहनतकशों की संस्कृति की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण मानी जाती है और जब चयन प्रक्रिया को ज़रूरी व अनिवार्य मान कर उचित साबित किया जाता है, तब यह बात सामान्य हो जाती है कि स्कूली तंत्र से समाज दो हिस्सों में बंट जाए। सोचने वाले, आदेश देने वाले व प्रशासन करने वालों का एक छोटा समूह हो और एक विशाल समूह उनका हो जो आदेशों का पालन करें, बात मानें व आज्ञाकारी हों।

इस समूहीकरण में स्कूल की एक ख़ास भूमिका है। क्योंकि बिना थके, स्कूल यही सबक़ सिखाता है कि उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति ही विशेषज्ञ हो सकता है; कि ज्ञान से ही समाज में दबदबा बनता है और जो जितनी अधिक शिक्षा प्राप्त करेगा, उसका उतना ही अधिक दबदबा होगा।

ऐसे में यह बात विचारणीय है कि उन लोगों के लिए स्कूल का क्या महत्त्व है जो उच्च शिक्षा में अपना क़दम नहीं रख पाते? क्या वे मेहनत की दुनिया में प्रवेश करने के पहले स्कूल से कुछ उपयोगी बातें सीखते हैं?

उनको यह पता चलता है कि स्कूल में जो भी पढ़ाया जाता है, उसे साथियों के साथ बांटा नहीं जा सकता। क्योंकि इस पढ़ाई का उनकी रोज़मर्रा की ज़िंदगी को बेहतर बनाने से कोई वास्ता नहीं है। स्कूली पढ़ाई से थोड़ा-बहुत लाभ यही है कि मज़दूरी के बाज़ार में इसके दम पर अपनी कार्यक्षमता के लिए थोड़ा अधिक पैसा हासिल किया जाए।

अपनी मज़दूरी को, जो अपने आप में एक उपभोग की वस्तु बन गई है, बेचकर हम अनेक प्रकार के विशेषज्ञों की सेवा खरीद सकते हैं। जिनमें शामिल हैं कई सरल व ज़रूरी सेवाएं, जैसे—स्वास्थ्य पोषण, जानकारी, संपर्क व संचार, खेलकूद आदि।

इस तरह
स्कूली शिक्षा से
निर्भरता व ग़ैरबराबरी
का तजुर्बा करके
हम अपनी काम करने
की शक्ति खो देते हैं,
और खो देते हैं
साथ मिलकर कुछ नया
बनाने की क्षमता,
साथ रहने का तरीका!
हम खो देते हैं
वास्तविकता को एक
आलोचनात्मक तरीके से
देखने की क्षमता
और पक्ष लेने की ताक़त!
और इस तरह
हम खो देते हैं
विकल्प खोजने का नज़रिया!

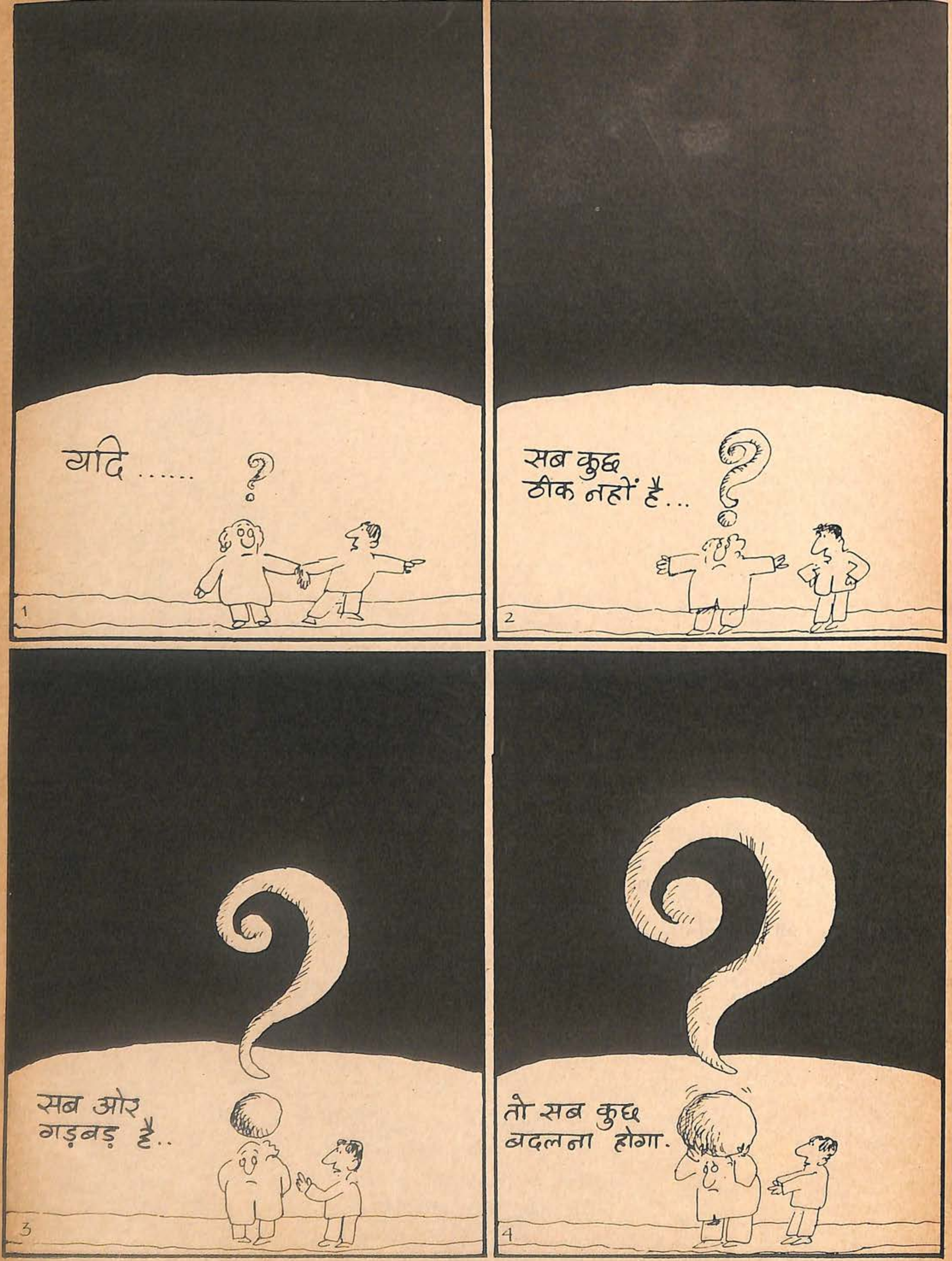
यदि ......
1
सब कुछ
ठीक नहीं है...
2
सब ओर
गड़बड़ है..
3
तो सब कुछ
बदलना होगा.
4

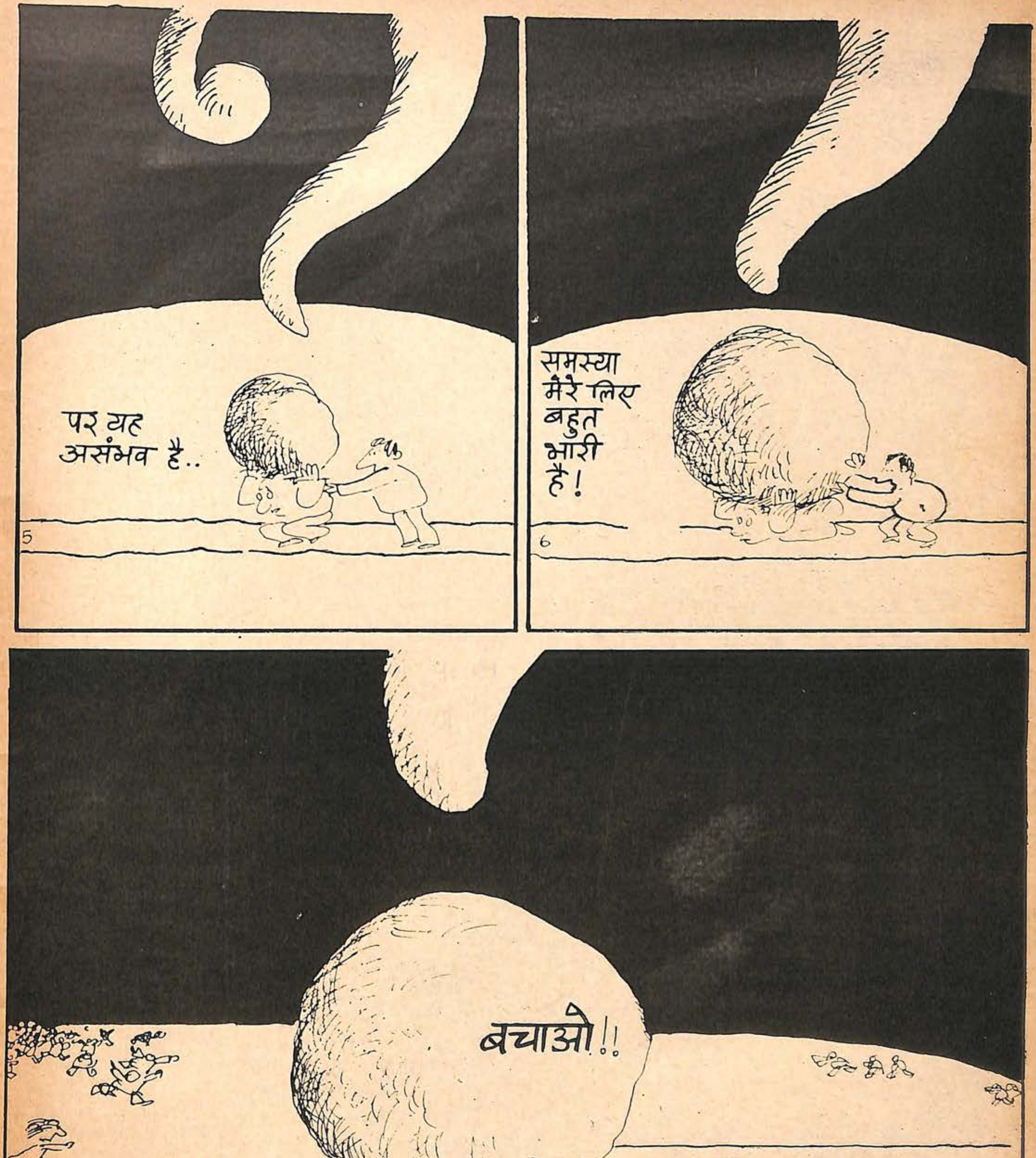
पर यह असंभव है..
समस्या मेरे लिए बहुत भारी है!
बचाओ!!
भविष्य

फिर भी बदलाव तो होते हैं....

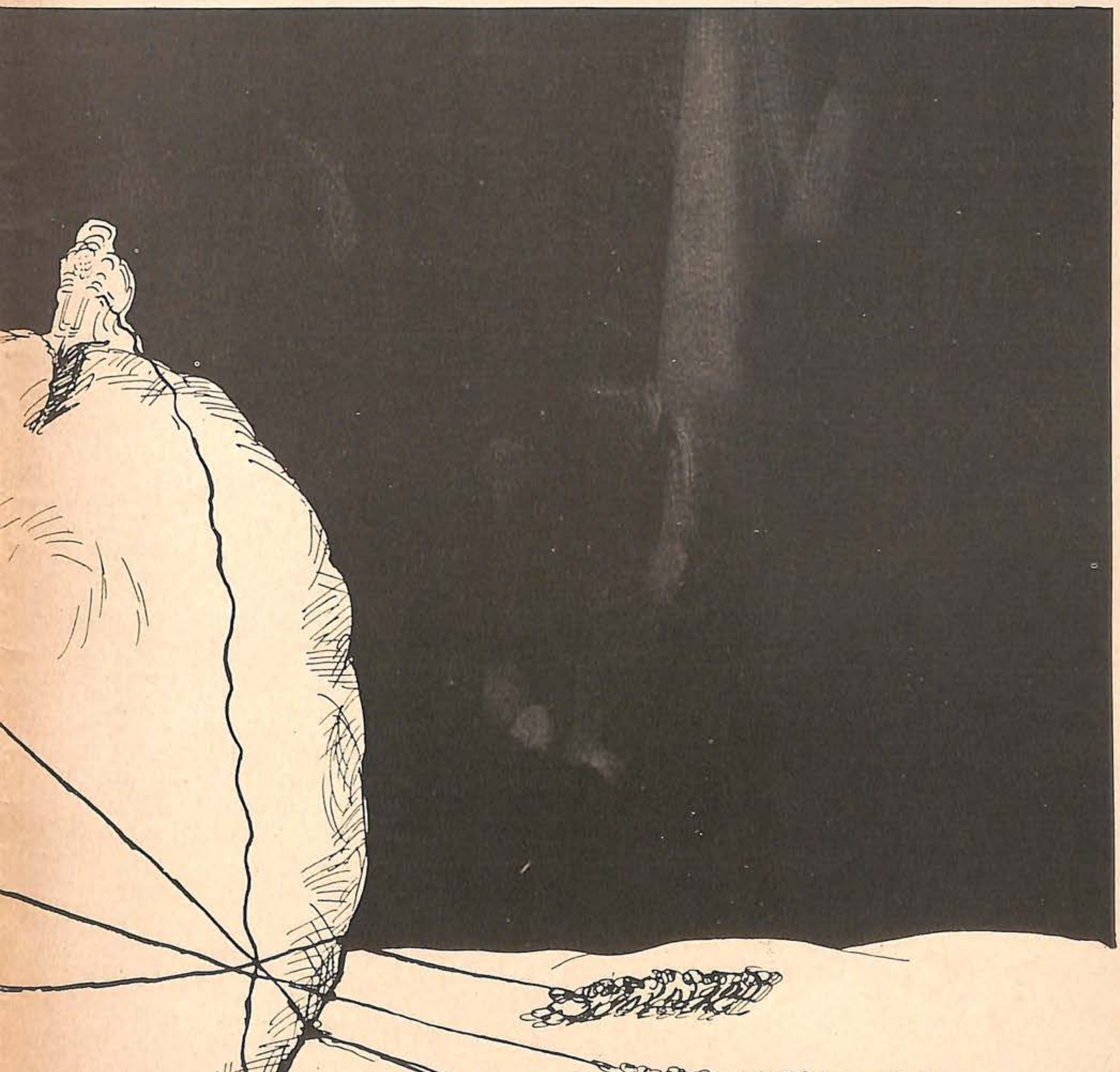

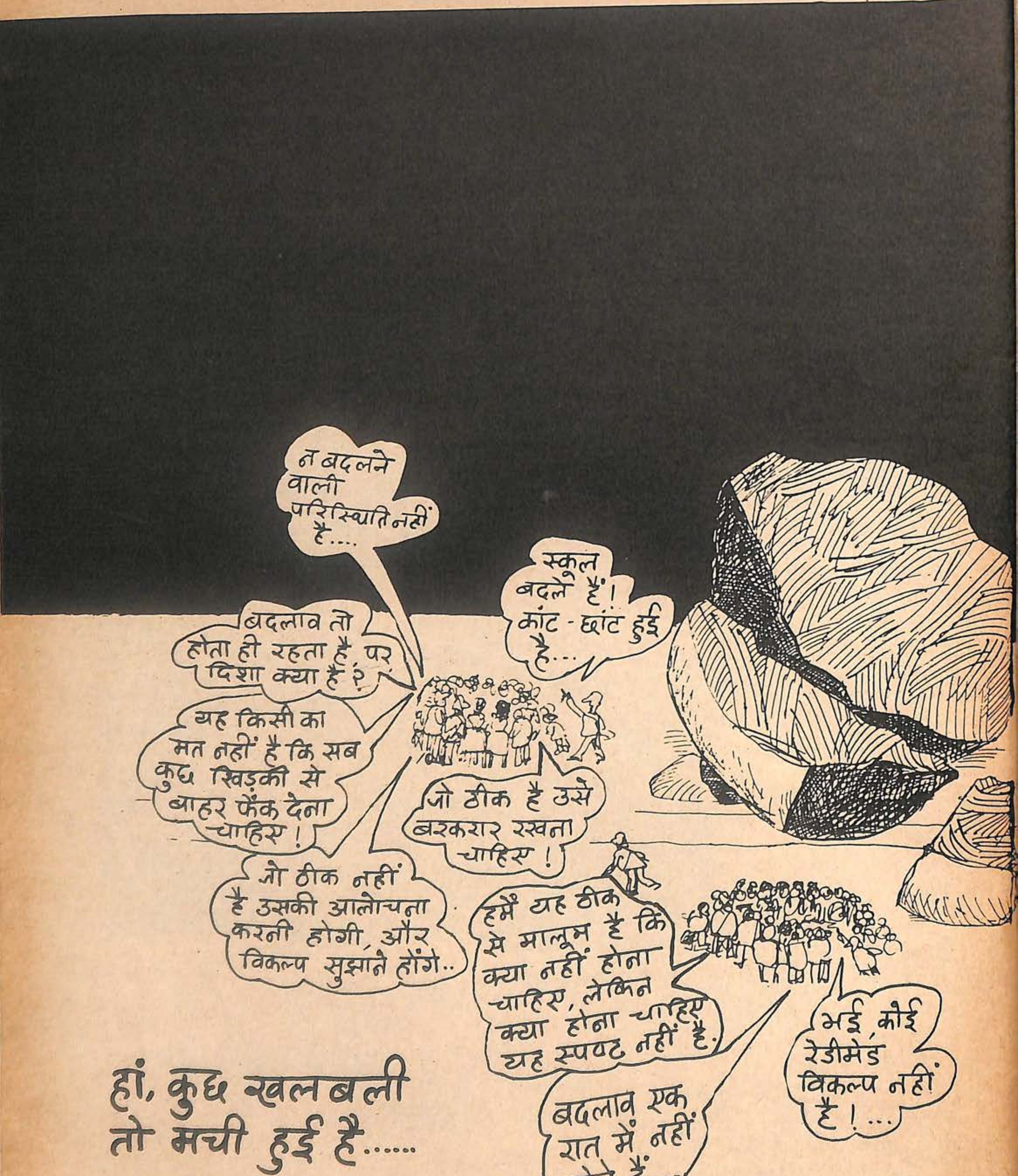
न बदलने वाली परिस्थिति नहीं है....
स्कूल बदले हैं! कांट-छांट हुई है...
बदलाव तो होता ही रहता है, पर दिशा क्या है?
यह किसी का मत नहीं है कि सब कुछ खिड़की से बाहर फेंक देना चाहिए!
जो ठीक है उसे बरकरार रखना चाहिए!
जो ठीक नहीं है उसकी आलोचना करनी होगी, और विकल्प सुझाने होंगे..
हमें यह ठीक से मालूम है कि क्या नहीं होना चाहिए, लेकिन क्या होना चाहिए यह स्पष्ट नहीं है.
भई, कोई रेडीमेड विकल्प नहीं है!...
बदलाव एक रात में नहीं होते हैं...
हां, कुछ खलबली तो मची हुई है......

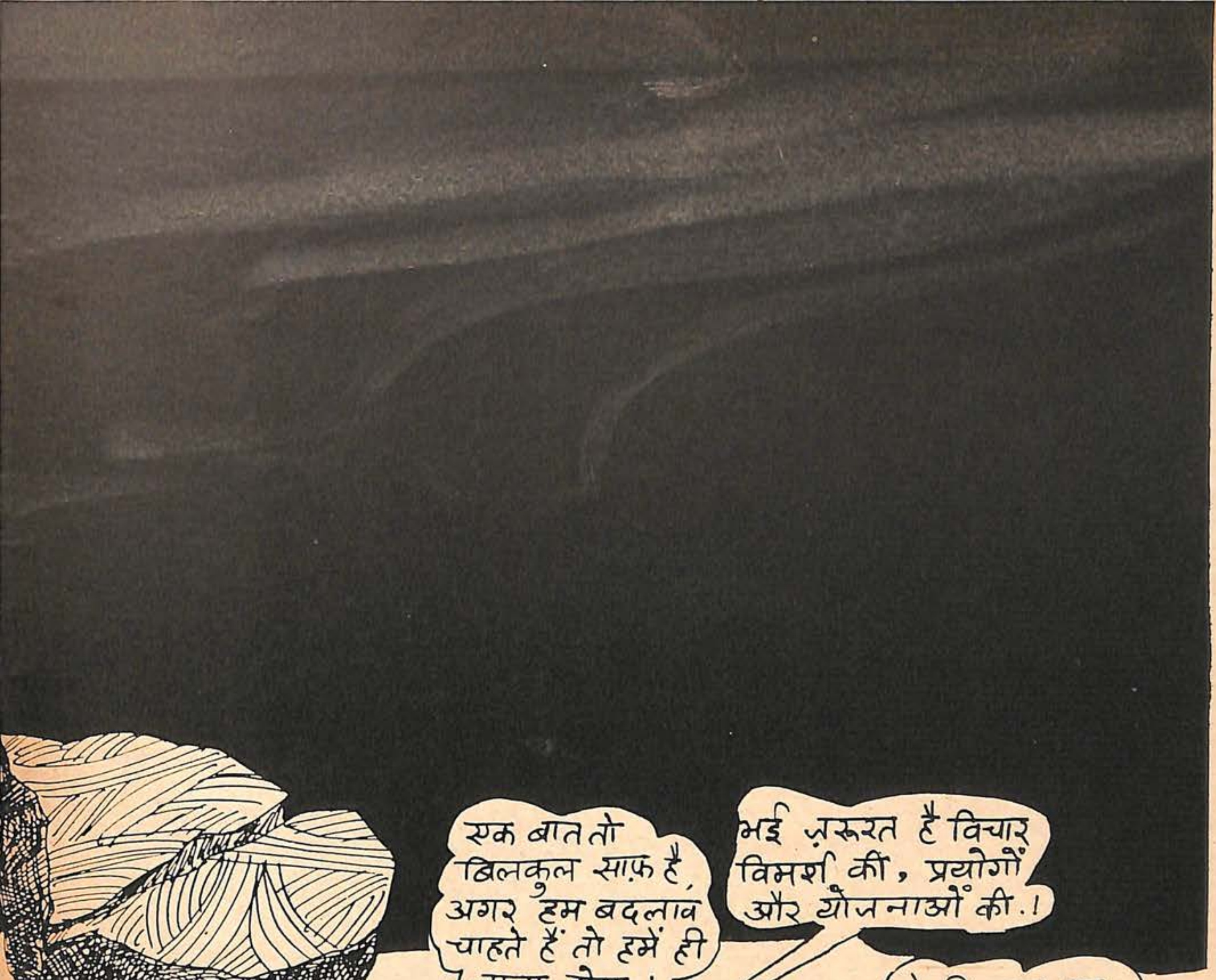

रूपांतरण : विनोद रायना
(समाप्त)

मैडम - मैडम

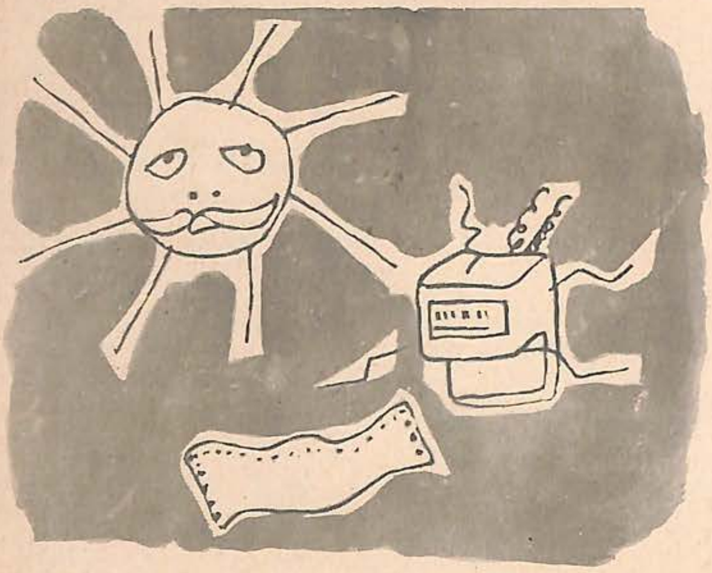

सूरज अंकल का गुस्सा कल
हमने देखा था मैडम
मुट्ठी के अंदर बिजली का
भारी बिल देखा था मैडम

क्यूं उत्पादन घट जाता है
बढ़ती है महंगाई मैडम
क्यूं मन भर की हो जाती है
रत्ती भर की राई मैडम

क्यूं आबादी बढ़ जाती है
बढ़ते नहीं कदम मैडम
क्यूं मिट जाती हैं तारीखें
मिटते नहीं वहम मैडम

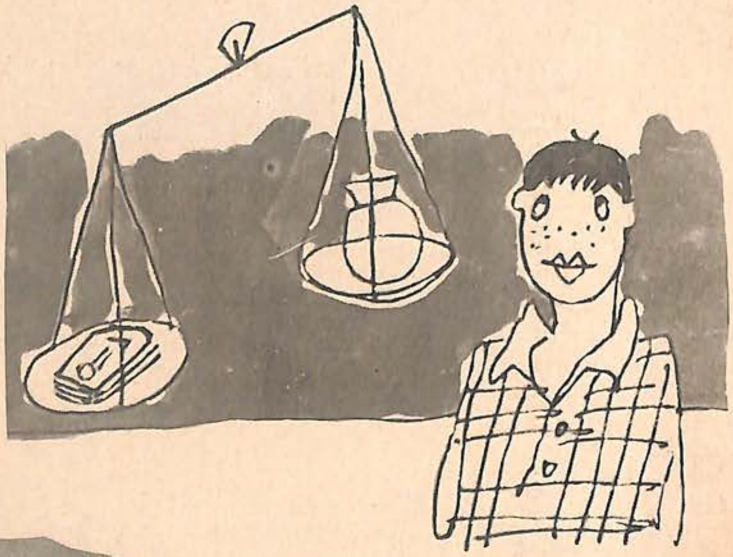

जानमाल की सबसे ज्यादा
हानि होती है मैडम
जब लड़ाइयां और दोस्ती
बेमानी होती हैं मैडम

चट्टानों से ज़ोर ज़ोर से
लहरें टकराती हैं मैडम
लगता है गर्मी में ठण्डी
आंधी आती है मैडम

☐ राहुल डबराल

सभी चित्र : अक्षत चराटे

ग्रामीण विकास के लिए नई पहल

मध्यप्रदेश में पंचायतराज

- ☐ प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की पंचायतों को अधिक अधिकार देने की घोषणा से पंचायतों की भूमिका विकास कार्यों में काफी बढ़ गई है। पंचायतें अपनी ज़िम्मेदारी पूरी तरह निभा सकें इसे ध्यान में रखकर मध्यप्रदेश सरकार ने पंचायत अधिनियम में संशोधन किया है।
- ☐ इस संशोधन से ग्राम पंचायतों में आदिवासियों, हरिजनों और महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित की गई है।
- ☐ पंचायत अधिनियम में संशोधन से प्रदेश में फरवरी, '89 में निर्वाचित 11,252 ग्राम पंचायतों के हरिजन, आदिवासी तथा महिला सरपंचों सहित सभी सरपंच और पंच विधिवत निर्वाचित घोषित किए गए हैं।
- ☐ परिसीमन के फलस्वरूप गठित ग्राम पंचायतों और जुलाई माह में कार्यकाल समाप्त होने वाली 9,995 ग्राम पंचायतों के कार्य संचालन के लिए अशासकीय समितियों का गठन किया गया है। इन समितियों में निवृत्तमान पंच सदस्य बनाए गए हैं। यह समितियां ग्राम पंचायतों के सभी दायित्वों का निर्वाह करेंगी। इन समितियों का प्रधान पूर्व सरपंच को ही बनाने का निर्णय भी शासन ने लिया है। 2276 ग्राम पंचायतों के कार्यकाल समाप्त होने में अभी समय है।
- ☐ ग्रामीण आबादी में अनुसूचित जाति और जनजाति की जनसंख्या के अनुपात में 14.52 प्रतिशत सरपंचों के पद अनुसूचित जाति के लिए और 27.78 प्रतिशत पद अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित किए गए हैं। प्रदेश की कुल 23,523 ग्राम पंचायतों में से 3,416 ग्राम पंचायतों के सरपंचों के पद अनुसूचित जाति के लिए और 6,535 सरपंचों के पद अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित किए गए हैं।
- ☐ प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने गांव के हर परिवार के कम से कम एक सदस्य को रोज़गार देने के उद्देश्य से पूरे देश में "जवाहर रोज़गार योजना" लागू की है। इस योजना को लागू करने का काम पूरी तौर से ग्राम पंचायतों को ही सौंपा गया है। पंचायतों को और अधिक मज़बूती देने के लिए मध्यप्रदेश सरकार द्वारा पंचायत अधिनियम में किए गए, संशोधन से ग्राम पंचायतें पूरी मज़बूती के साथ "जवाहर रोज़गार योजना" और अन्य विकास कार्यों को अमलीजामा पहना सकेंगी।

हक़दार की तरफ़दार — मध्यप्रदेश सरकार

ज.सं.सं. .... /89.

जीवन की सच्ची प्रसन्नता अपने आपको किसी महान उद्देश्य से संबंद्ध करना, दिल और दिमाग से उसके लिए काम करना और उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अपने अकिंचन अहम् को भुलाना है।

☐ जवाहरलाल नेहरू

प्रदेश के शैक्षणिक विकास में संलग्न

मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम
शिवाजी नगर, भोपाल

वीरेन्द्र तिवारी
अध्यक्ष

ताम्रध्वज साहू
उपाध्यक्ष

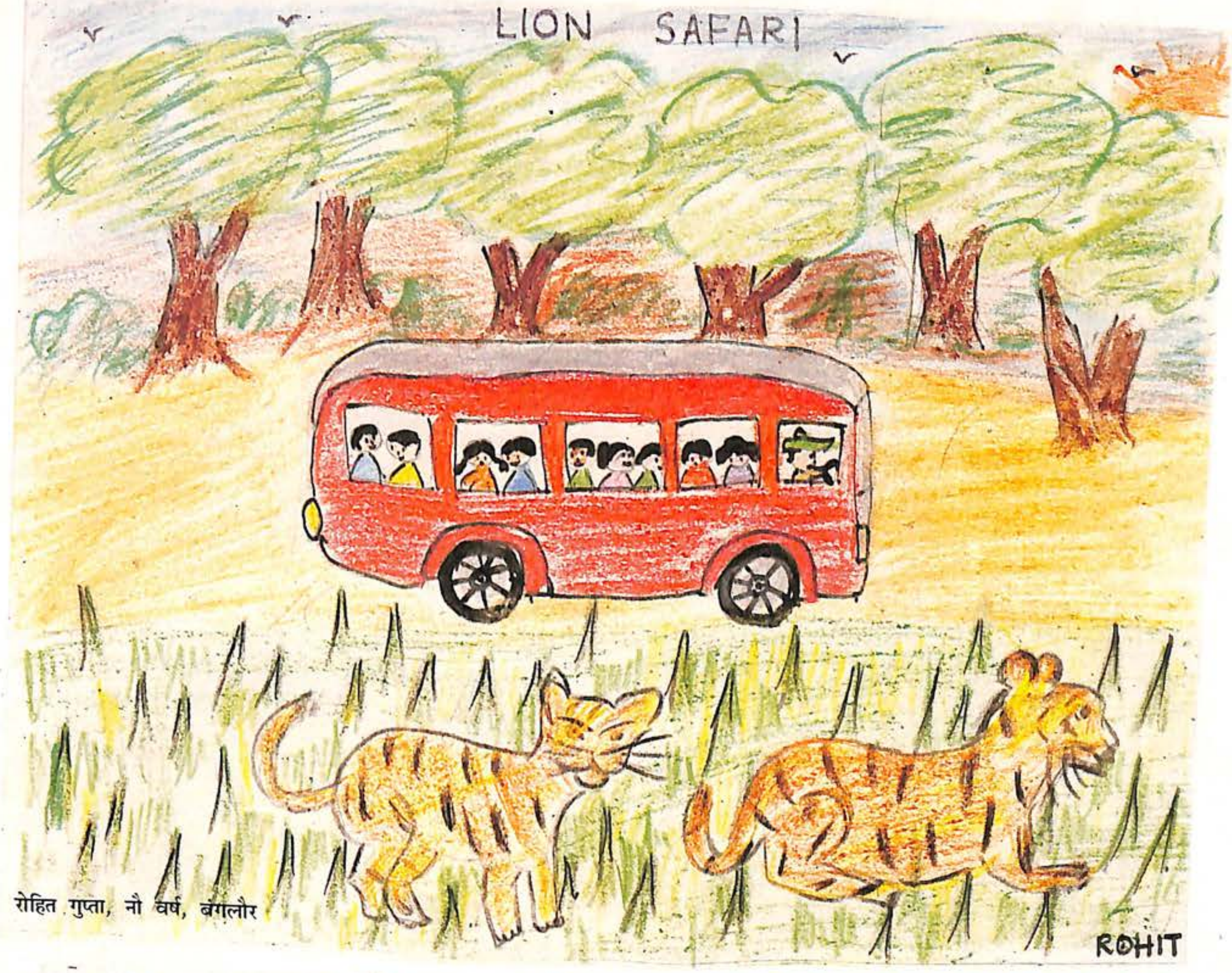

रोहित गुप्ता, नौ वर्ष, बंगलौर

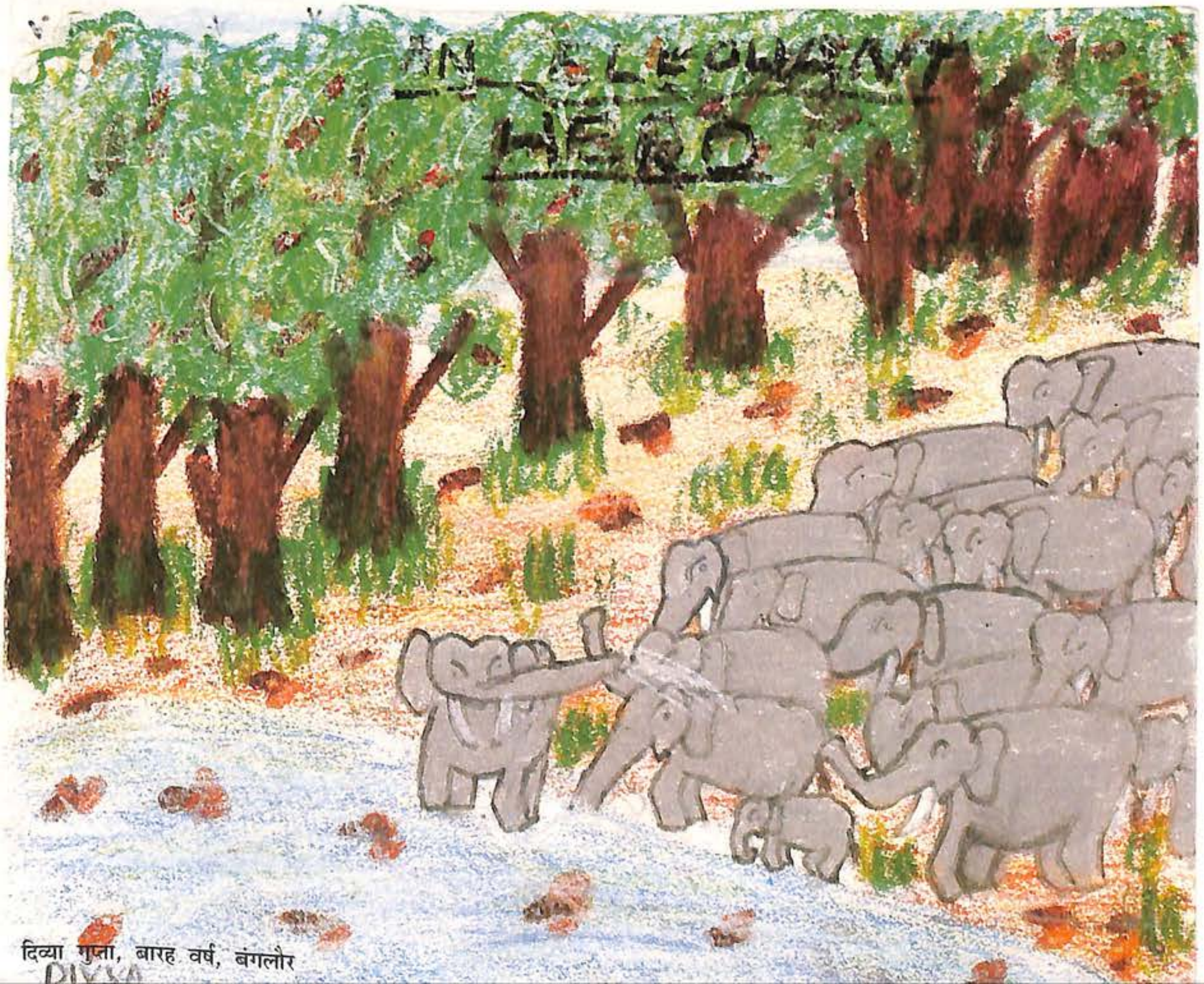

दिव्या गुप्ता, बारह वर्ष, बंगलौर

पंजीयन क्रमांक 1317/सी/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्टार द्वारा पंजीकृत।
डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/89

एकलव्य के लिए विनोद रायना द्वारा प्रकाशित। कंपोज़र्स - अभिषेक। मुद्रक - भंडारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल।